आत्मोत्थान

कर्मकाण्ड प्रकाश

संपादक

श्री राज कुमार तिवारी

(धर्मगुरु)

सह संपादक

पं. राजकुमार शुक्ल

आचार्य मनीष कुमार दूबे

वेदाचार्य सौरभ शुक्ल

आचार्य श्री पंडित विवेक जी महाराज

आत्मोत्थान शिवाश्रम सेवा ट्रस्ट

135/1K, शंकरघाट, तेलियरगंज, प्रयागराज

संस्थापक / संरक्षक
पं० श्री राधे कृष्ण मिश्र

संपादक
श्री पं. राज कुमार तिवारी
(धर्मगुरु)

सह संपादक
पं. राजकुमार शुक्ल (योग गुरु)
आचार्य मनीष कुमार दूबे
वेदाचार्य पं. सौरभ शुक्ल
आचार्य श्री पंडित विवेक जी महाराज

प्रधान कार्यालय
आत्मोत्थान शिवाश्रम सेवा ट्रस्ट
135/1K निकट शनिदेव मंदिर, शंकरघाट, तेलियरगंज,
प्रयागराज पिन- 211004
फोन नं.- 9415805538, 9415193067. 0451755991, 9918049966

प्रकाशन वर्ष
2022 वर्ष (प्रथम)

मूल्य : 150 रुपये

पृष्ठविन्यास
कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान
दारागंज, प्रयागराज, मो. 9450407739

मुद्रक :
इनफिनिटी इमेजिंग सेस्टम, नई दिल्ली

सम्पादकीय

सनातन धर्म में पुनर्जन्म एवं कर्म सिद्धान्त का विशेष महत्त्व है। मानव को जन्म लेकर अपने कर्तव्य के पालन एवं स्व–धर्माचरण के प्रति सावधान होना चाहिए तथा सदैव पुण्य वर्धन के लिए सचेत रहना चाहिए। आज सनातन समाज में अनेक प्रकार की पूजा पद्धतियों का नियम एवं विधान है, जिसमें समय को देखते हुए व्यवहारिक एवं वैदिक व्यवस्था के अन्तर्गत आत्मोत्थान कर्मकाण्ड प्रकाश पुस्तक का संकलन किया गया है जिसमें शास्त्र विधि के अनुसार मानव जीवन के आत्मोत्थान के लिए वैदिक व लौकिक मन्त्रों का संकलन करके एक विधान की व्यवस्था की गयी है जो सनातन संस्कृति के उत्थान के लिये बहुत उपयोगी है।

अब तक संस्था की तरफ से जिन विद्वानों की रचनाओं से मार्गदर्शन प्राप्त किये हैं, उनका विशेष आभार व धन्यवाद व्यक्त करते हैं।

सम्पादक

पं. राजकुमार तिवारी

धर्मगुरु

भारतीय सेना

––––o––––

विषय-सूची

गुरु-ईश वन्दना	6	गौरी ध्यान/ आवाहन	18
सरस्वती वन्दना	6	आवाहन	18
व्यास पीठ वन्दना	7	गायत्री आवाहन/पूजन	19
साधनादिपवित्रीकरणम्	8	कलश स्थापन/पूजन	19
मङ्गलाचरणम्	8	ध्यान्यप्रक्षेप	20
पवित्रीकरणम्	9	कलश-स्थापन	20
आचमनम्	9	कलश में जल	20
पवित्रीधारणम्	10	कलश में चन्दन	20
यज्ञोपवीत धारणम्	10	कलश में सर्वोषधि	20
चन्दनधारणम्	11	कलश में दूब	21
रक्षासूत्रम्	11	कलशपर पञ्चपल्लव	21
शिखावन्धनम्	11	कलश में पवित्री	21
प्राणायामः	12	कलश में सप्तमृत्तिका	21
न्यासः	12	कलश में देवी-देवताओं का आवाहन	22
आसन शुद्धि करणम्	13	प्रतिष्ठा	23
पृथ्वी पूजनम्	13	नवग्रह-मण्डल-पूजन	23
दीप पूजनम्	13	नवग्रह-मण्डल की प्रतिष्ठा	26
स्वस्तिवाचनम्	14	नवग्रह-पूजन	26
संकल्पम्	17	प्रमुख देवता मंत्र ध्यान	27
गुरुध्यान/पूजन	17	सर्वदेव प्रतिष्ठा	31
गणेश ध्यान/ आवाहन	18	पूजनम्	31
आवाहन	18		

मन्त्रपुष्पाञ्जलि	41	लघुसर्वतोभद्र वेदिका पूजन	59
सर्वदेव नमस्कारः	42	पुरुषसूक्तम्	64
रक्षाविधानम्	42	रुद्र सूक्त	65
मेखलापूजन	43	श्रीसूक्तम्	67
अग्निस्थापनम	44	जन्मदिवस संस्कार	68
गायत्रीस्तवनम्	45	दीपदान	70
अग्निप्रदीपनम्	47	व्रतधारण	70
समिधाधानम्	47	विशेष आहुति	71
जलप्रसेचनम्	48	विवाह दिवस संस्कार	71
आज्याहुतिः	48	सङ्कल्प	71
महामंत्राहुति	49	यज्ञ महिमा गीत	72
सर्वदेव नाममन्त्रैः आहुति	52	गायत्री माता की आरती	73
महामृत्युंजय मंत्र आहुति	53	गणेशजी की आरती	74
स्विष्टकृत्होमः	53	त्रिगुणेश्वर भगवान शिव जी	
नीराजनम् आरती	54	की आरती	76
पुष्पाञ्जलिः	55	जगत जननी भगवती दुर्गा जी	
घृतावघ्राणम्	55	की आरती	77
भस्मधारणम्	56	गंगा जी की आरती	78
क्षमा प्रार्थना	57	श्रीहनुमान जी की आरती	79
साष्टाङ्गनमस्कारः	58	पूजन सामग्री	80
शान्ति-अभिषिञ्चनम्	58	सन्ध्या में ज्ञातव्य	81
विसर्जनम्	59	सन्ध्यावन्दन	84-104

गुरु-ईश वन्दना

गुरु- व्यक्ति तक सीमित नहीं, एक दिव्य चेतन प्रवाह- ईश्वर का अंश है। चेतना का एक अंश जो अनुशासन व्यवस्था बनाता, उसका फल देता है- ईश्वर कहलाता है, दूसरा अंश जो अनुशासन की मर्यादा सिखाता है, उसमें प्रवृत्त करता है, वह गुरु। आइये, गुरुसत्ता को नमन-वन्दन करें।

ॐ ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं, केवलं ज्ञानमूर्तिं,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं, तत्त्वमस्यादि-लक्ष्यम्।।
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वधीसाक्षिभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं, सद्गुरुं तं नमामि।।१।।
अखण्डानन्दबोधाय, शिष्यसन्तापहारिणे।
सच्चिदानन्दरूपाय, तस्मै श्री गुरवे नमः।।२।।

अर्थात् -ब्रह्मानन्द स्वरूप, परम सुख देने वाले, केवल ज्ञान मूर्ति, द्वन्द्व (सुख-दुःख, लाभ हानि आदि) से परे, आकाश के समान (व्यापक), तत्त्वमसि आदि महावाक्य के लक्ष्य भूत, एक, नित्य,विमल, अचल, सदा साक्षी स्वरूप, भाव (शुभ-अशुभ) से अतीत, तीनों गुणों (सत, रज, तम,) से रहित (परे) उस सद्गुरु को नमस्कार करता हूँ।

सरस्वती वन्दना

माँ सरस्वती विद्या एवं वाणी की देवी हैं। बोले गये शब्द में अन्तःकरण को प्रभावित करने योग्य प्राण पैदा हो, इस कामना भावना के साथ माँ सरस्वती की वन्दना करें।

लक्ष्मीर्मेधा धरापुष्टिः, गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः।
एताभिः पाहि तनुभिः, अष्टाभिर्मां सरस्वति।।१।।
सरस्वत्यै नमो नित्यं, भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेदवेदान्तवेदाङ्ग, विद्यास्थानेभ्य एव च।।२।।

मातस्त्वदीय-पदपंकज-भक्तियुक्ता,
ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण,
भूवह्निवायुगगनाम्बुविनिर्मितेन।।३।।

अर्थात् लक्ष्मी, मेधा, धरा, पुष्टि, गौरी, तृष्टि, प्रभा, धृति- इन आठ रूपों वाली देवी सरस्वती हमारी रक्षा करें।

अर्थात् -वेद वेदान्त तथा वेदाङ्ग- विद्या के स्वरूप वाली माता सरस्वती एवं भद्रकाली को बारम्बार नमस्कार है।

अर्थात्- हे माँ सरस्वति! जो लोग अन्य जनों का आश्रय त्याग कर, भक्ति-भाव पूरित हृदय से आपके चरण कमलों का भजन (सेवन) करते हैं, वे पञ्चतत्त्व- (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश-) निर्मित शरीर से देवतत्त्व पा जाते हैं

व्यास पीठ वन्दना

व्यास -व्यासपीठ पर बैठकर कर्मकाण्ड सञ्चालन का जो उत्तरदायित्व उठाया है, उसके अनुरूप अपने मन, वाणी अतःकरण, बुद्धि आदि को बनाने की याचना इस वन्दना के साथ करें।

व्यासाय विष्णुरूपाय, व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये, वासिष्ठाय नमो नमः।।१।।
नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे, फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।

- ब्र.पु. २४५.७.११

अर्थात् -ब्रह्मनिधि (ब्रह्मज्ञान से परिपूर्ण) वसिष्ठ वंशज (वसिष्ठ के प्रपौत्र) विष्णु रूपी व्यास और व्यास रूपी विष्णु को नमस्कार है।

अर्थात् -अत्यधिक बुद्धिशाली, विकसित कमल की तरह नेत्रों वाले, हे महर्षि व्यास! आपको नमस्कार है। आपने महाभारत रूपी तेल से परिपूर्ण ज्ञानमय प्रदीप प्रज्वलित किया है।

साधनादिपवित्रीकरणम्

सत्कार्यों, श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिये यथाशक्ति साधन, माध्यम भी पवित्र रखने पड़ते हैं। कर्मकाण्ड में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों , साधनों में सन्निहित अशुभ संस्कार हटाये जाते हैं, उन्हें मन्त्र शक्ति से नष्ट किया जाता है एवं देवत्व का संस्कार जगाया जाता है। एक प्रतिनिधि जल लेकर मंत्र पाठ के साथ पल्लवों/ कुशाओं से सभी उपकरणों, साधकों, पूजन सामग्रियों पर जल सिंचन करें। भावना करें मन्त्र शक्ति के प्रभाव से उनमें कुसंस्कारों के पलायन और सुसंस्कारों के उभार स्थापना का क्रम चल रहा है।

ॐ पुनातु ते परिस्रुतः ँ सोम ँ सूर्यस्य दुहिता।

वारेण शश्वता तना। - १९.४

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा। - १९.३९

अर्थात् - हे यजमान ! जिस प्रकार सूर्यपुत्री उषा सोम को शाश्वत छन्ना (प्रकृतिगत शोधन प्रक्रिया) से पवित्र करती है, उसी प्रकार श्रद्धा तुम्हे पवित्र करती है। (देवशक्तियों के लिए उपयोगी बनातीं है।)

अर्थात् - देवगण हमें पवित्र बनाएँ। सुविचारों से सुवासित मन एवं बुद्धि हमें पवित्र बनाएं। सम्पूर्ण प्राणी हमें पवित्र बनाएं। हे जातवेदः (अग्निदेव) !आप भी हमें पवित्र बनाएं।

मङ्गलाचरणम्

प्रत्येक शुभ कार्य को सम्पन्न करने से पहले वाले जायकों, साधकों के कल्याण,उत्साह अभिवर्धन, सुरक्षा और प्रशंसा की दृष्टि से पीले अक्षत और पुष्प की वर्षा कर स्वागत किया जाता है। मन्त्र के साथ भावना की जाय, देव अनुग्रह की वर्षा हो रही है, देवत्व के धारण तथा निर्वाह की क्षमता का विकास हो रहा है।

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳪ सस्तनूभि र्व्यशेमहि देव हितं यदायुः।।

– २५.२१

याजकों के पोषक हे देवताओं! हम सदैव कल्याणकारी वचनों को ही अपने कानों से सुनें, नेत्रों से सदैव कल्याणकारी दृश्य ही देखें। हे देव! परिपुष्ठ अंगो से युक्त सुदृढ़ शरीर वाले हम आपकी वन्दना करते हुए– लोक हितकारी कार्यों को करते हुए पूर्ण आयु तक जीवित रहें।

पवित्रीकरणम्

देवत्व से जुड़ने की पहली शर्त पवित्रता है। उन्हें शरीर और मन से, आचरण और व्यवहार से शुद्ध व्यक्ति ही प्रिय होते हैं। इसीलिये यज्ञ जैसे श्रेष्ठ कार्य में भाग लेने के लिये शरीर और मन को पवित्र बनाना होता है। बायें हाथ की हथेली में एक चम्मच जल लें, दायें हाथ से ढकें, मन्त्र से अभिपूरित जल शरीर पर छिड़कें, भाव करें हम अन्दर और बाहर से पवित्र हो रहे हैं।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः,
पुनातु।

– वा.पु. ३३.६

पवित्र अथवा अपवित्र किसी भी अवस्था में कोई क्यों न हो, जो पुण्यरीकाक्ष (कमलवत् निर्लिप्त नेत्रों वाले भगवान् –विष्णु) का स्मरण करता है, वह अन्तर्बाह्य (शरीर– मन) से पवित्र हो जाता है हे परमात्मन् !हमें पवित्र करो, हे पुण्डरीकाक्ष! हमें पवित्र करो, हे पुण्डरीकाक्ष! हमें पवित्र करो।

आचमनम्

आचमन का अर्थ है क्रियाशक्ति, विचारशक्ति और भावशक्ति का परिमार्जन इन तीनों ही केन्द्रों में शान्ति, शीतलता, सात्विकता और पविपत्रता का समावेश हो। इन इन्हीं भावना के साथ तीन आचमनी जल स्वाहा के साथ मुख में डालें।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।१।।

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।।२।।

ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि, श्रीः श्रयतां स्वाहा।।३।।

– आश्व.गृ.सू. १.२४ मा.गृ.सू. १.९

हे अमृत स्वरूप जल (देवता) तुम मेरे बिस्तर (आधार) हो।

हे अमृत स्वरूप जल (देवता) तुम मेरे आच्छादन (उपकारण)हो। हे देव!

मुझे सत्य, यश और श्री– समृद्धि से सम्पन्न बनाओ।

।। पवित्रीधारणम् ।।

स्नान, संध्योपासन, पूजन, जप, होम, वेदाध्ययन और पितृकर्ममें पवित्री धारण करना आवश्यक है। यह कुशाओं से बनायी जाती है। सोने की अँगूठी भी पवित्री के अभाव होने पर काम में आती है। पवित्री पहनकर आचमन करनेमात्रसे 'कुश' जूठ नहीं होता । अतः आचमनके पश्चात् इसका त्याग भी नहीं होता। हाँ, पवित्री पहनकर यदि भोजन कर लिया जाय, तो वह जूठी हो जाती है और उसका त्याग अपेक्षित है। दो कुशोंसे बनायी हुई पवित्री दाहिने हाथकी अनामिकाके मूल भागमें तथा तीन कुशोंसे बनायी गयी पवित्री बायीं अनामिकाके मूलमें 'ऊँ भूर्भवः स्वः मन्त्र पढ़कर धारण करे। दोनों पवित्रीयाँ देवकर्म, ऋषिकर्म तथा पितृकर्ममें उपयोगी है।

' ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्। '

।। यज्ञोपवीत धारणम् ।।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

– पार. गृ. सू. २.२.११

स्वाभाविक रूप से प्रजापति से युक्त परमपवित्र यज्ञोपवीत शुभ्रवर्ण आयुष्कारक अग्रणीकर्ता तेज व बल प्रदान करने वाला यज्ञोपवीत मेरे लिए हो।

।। चन्दनधारणम् ।।

ॐ चन्दनस्य महत्पुण्यं, पवित्रं पापनाशनम् ।
आपदां हरते नित्यं, लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।।

चन्दन का महान पुण्य है पवित्र, पापनाशक, नित्य आपदाहर्ता उसके घर लक्ष्मी सदा निवास करती हैं।

।। रक्षासूत्रम् ।।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।। - १९.३०

व्रत से दीक्षा प्राप्त होती है। दीक्षा से दक्षिणा मिलती है। दक्षिणा मिलने पर श्रद्धा की प्राप्ति तथा श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।

येन बद्धो बलीराजा, दानवेन्द्रो महाबलः।
तेनत्वांप्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

।। शिखावन्धनम् ।।

शिखा का दूसरा नाम चोटी भी है। चोटी शिखर स्तर की होती है। हम भी शिखर स्तर के उच्च विचारों, भावनाओं और आदर्शो से युक्त हों। इन्हीं भावनाओं के साथ बायें हाथ की हथेली में जल लेकर दायें हाथ की उँगलियों को गीलाकर शिखा स्थान का स्पर्श करें।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।। - सं. प्र.

हे चिद्रूपवाली महामाया, दिव्यतेज से समन्वित शिखा मध्य में बैठकर मेरे तेज की वृद्धि कीजिये।

प्राणायामः

श्रेष्ठता के संवर्धन और निक्रिष्टता के निष्कासन के लिये विशिष्ट प्राण शक्ति की जरूरत होती है। प्राणायाम की क्रिया द्वारा उसी शक्ति को अन्दर धारण किया जाता है। कमर सीधी करके बैठें, धीरे-धीरे गहरी श्वास अन्दर खीचें, यथाशक्ति अन्दर रोकें, धीरे- धीरे बाहर निकालें, थोड़ी देर बिना श्वास के रहं। भावना करें शरीरबल, मनोबल और आत्मबल में वृद्धि हो रही है।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः, ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ।
ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं, ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो ॐ। – तै. आ. १०.२७

ॐ अर्थात् परमात्मा भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, जनः, तपः और सत्यम् –इन सात लोकों में संव्याप्त है। उस वरण करने योग्य भर्ग स्वरूप (पापनाशक) दिव्य सविता देवता का ध्यान करता हूँ, जो (वह) हमारी बुद्धि को (सत्कर्म में) प्रेरित करे। ब्रह्म (परमात्मा) आपः (जल) रूप, ज्योति (तेज) रूप, रस (आनन्द) रूप तथा अमृतरूप है, भूः भुवः आदि समस्त लोकों में विद्यमान है।

न्यासः

ॐ वाङ्मे आस्येऽस्तु। (मुख को)

ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। (नासिका के दोनों छिद्रों को)

ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। (दोनों नेत्रों को)

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (दोनों कानों को)

ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। (दोनों भुजाओं को)

ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु। (दोनों जंघाओं को)

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि, तनूस्त्वा मे सह सन्तु। (समस्त शरीर पर)

– पा. गृ. सू. १.३.२५

आसन शुद्धि करणम्

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम् ।। – सं. प्र.

हे परमात्मन् ! मेरे मुख में वाणी (वाक् शक्ति) हो । मेरी नासिक में प्राण तत्त्व हो मेरी आँखों में चक्षु (दर्शन शक्ति) हो। मेरे कानों में श्रवण (की शक्ति) हो। मेरी भजाओं में बल (बलिष्ठता) हो। मेरे समस्त अङ्ग दोषरहित होकर मेरे साथ सहयोग करें।

पृथ्वी पूजनम्

वेदों में कहा गया है 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' अर्थात् धरती हमारी माता है और हम सब इसके पुत्र हैं। धरती माता के ऋण से उऋण होने और उनके जैसी उदारता, सहनशीलता, विशालता के गुणों को धारण करने के भाव से एक आचमनी जल धरती पर छोड़ो तथा प्रणाम करें।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ꣳ ह पृथिवीं मा हि ꣳ सीः।।

हे पृथ्वी देवी तुमने लोक धारण कर रखा है। हे देवि ! तुम्हें विष्णु भगवान ने धारण किया था। ऐसी तुम मुझे धारण कर मेरा आसन पवित्र कर दीजिये।

दीप पूजनम्

दीपक को सर्वव्यापी चेतना का प्रतीक माना गया है। दीपक का गुण है ऊर्ध्वगमन और सबको प्रकाशित करना। हम भी दीपक की तरह महानता के पथ पर चलें और सबको ज्ञान का आलोक बाँटे और सबके जीवन के दुःख और अँधेरे को मिटाने का प्रयास करें, इसी भावना के साथ दीप देवता का पञ्चोपचार पूजन करें।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा। – ३.९

हे अग्नि तेजरूप है तथा तेज अग्निरूप है, हम तेजरूपी अग्नि में हवि देते हैं। सूर्य ज्योतिरूप है एवं ज्योति सूर्यरूप है, हम ज्योतिरूपी अग्नि में आहुति देते हैं। अग्नि वर्चस्रूप है और ज्योति वर्चस्रूप है, हम वर्चस्रूप अग्नि में हवन करते हैं। सूर्य ब्रह्म तेज का रूप है तथा ब्रह्मवर्चस सूर्यरूप है, हम उसमें हवि प्रदान करते हैं। ज्योति ही सूर्य है और सूर्य ही ज्योति है, हम उसमें (इस मन्त्र से) आहुति समर्पित करते हैं।

स्वस्तिवाचनम्

स्वस्ति का तात्पर्य है कल्याणकारी , वाचन अर्थात् वचन बोलना। सभी के कल्याण की कामना करते हुये प्रत्येक परिजन दायें हाथ में अक्षत, पुष्प, जल लें, बायाँ हाथ नीचे लगायें। मन्त्र पूरा हो जाने पर माथ से लगाकर पूजा की तश्तरी पर रख लें।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ँ रातिरभि नो निवर्तताम् । देवाना ँ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम् । अर्यमणं वरुण ँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ।।
तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो वृहक्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि

देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। (शु. य. २५/ १४-२३) द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। (शु.य. ३६।१७) यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।। (शु. य. ३६।२२)

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थम् पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनं हरिः।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।

स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।।

संकल्पम्

कुश, जल, अक्षत, पुष्प एवं द्रव्य लेकर संकल्प करें –

हरिः ॐ तत्सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ॐ नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्राह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तैक देशे पुण्यक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने .... संवत्सरे .... सूर्ये .... ऋतौ च महामांगल्यप्रदे ... मासे ... पक्षे ... तिथौ ... वासरे .... नक्षत्रे यथाराशि स्थिते सूर्ये ... चन्द्रे ... गुरौ स्थितितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथा लग्न, मुहूर्त, योग, करणान्वितायाम् एवं ग्रहगुणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ श्रुति स्मृति पुराणोक्त शास्त्रोक्त वेदोक्त फलप्राप्ति कामः ... गोत्रः ... नामाहं (शर्माहं, वर्माहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) सपत्नीकः ममाऽत्मनः सकुटुम्बस्य जन्मलग्नतो वा दुःस्थानगत ग्रहजन्य सकलारिष्ट निवृत्यर्थम् उत्पन्न उत्पत्स्यमान अखिलारिष्ट निवृत्तये दीर्घायुष्य सततारोग्यतावाप्तये धन-धान्य समृद्ध्यर्थम् च कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक चतुर्विध पुरुषार्थ प्राप्त्यर्थं च, धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि अनवच्छिन्न सत्संगति लाभार्थं, लोके व सभायां राजद्वारे व्यापारे सर्वत्र यशोविजय लाभादि प्राप्त्यर्थं शत्रु पराजयपूर्वकं बहुकीर्त्यादि अनेकानेक अभ्युदय फलप्राप्त्यर्थं च आत्मकल्याण, लोककल्याण, वातावरण-परिष्काराय, उज्ज्वल भविष्य-कामनापूर्तये, नित्यकल्याण-लाभाय भगवत्प्रीत्यर्थं भगवते अमुक नाम्ना ... देवस्य पूजनं करिष्ये (व कारिष्ये)।।

गुरुध्यान/पूजन

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुरेव महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।१।।

अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।२२।।

– गु.गी. ४३, ४५

मातृवत् लालयित्री च, पितृवत् मार्गदर्शिका।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै, श्रद्धा-प्रज्ञायुता च या।।३।।

गणेश ध्यान/ आवाहन

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ।।

आवाहन

ॐ गणानां त्वा गणपतिँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।। (यजुर्वेद २३।१९)

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

गौरी ध्यान/ आवाहन

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहन

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।।

(शु.य. २३।१८)

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्ये नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

गायत्री आवाहन/पूजन

ॐ आयातु वरदे देवि! त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनी।

गायत्रिच्छन्दसां मातः! ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तु ते।।४।। - सं. प्र.

ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।

आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् ।

मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् । - अथर्व. १९.७१.१

कलश स्थापन/पूजन

भारतीय संस्कृति में कलश का बड़ा महत्व है। वैदिक काल से ही शुभ अवसरों पर कलश स्थापना एवं पूजन का प्रचलन रहा है। कलश विश्व ब्रह्माण्ड का प्रतीक है, इसमें सभी देव शक्तियाँ निवास करती हैं। सभी में जल जैसी शीतलता एवं कलश जैसी पात्रता का विकास हो इस भाव से एक प्रतिनिधि जल, गन्ध- अक्षत, पुष्प, धूप- दीप, नैवेद्य से पूजन करें।

भूमि का स्पर्श - **ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ँ ह पृथिवीं मा हि ँ सीः।।**

वे मन्त्रों द्वारा अभिनन्दित हे वरुणदेव ! हवियों का दान देकर यजमान लौकिक सुखों की आकांक्षा करता है। हम वेद- वाणियों के ज्ञाता (ब्रह्मण) यजमान की तुष्टि एवं प्रसन्नता के निमित्त स्तुतियों द्वारा आपकी प्रार्थना करते हैं।

सबके द्वारा स्तुत्य देव! इस स्थान में आप क्रोध न करके हमारी प्रार्थना सुने। हमारी आयु को किसी प्रकार क्षीण न करें।

हे सवितादेव! आपका वगवान् मन आज्य (धृत) का सेवन करे। बृहस्पति देव इस यज्ञ को अनिष्ट रहित करके इसका विस्तार करें, इसे धारण करें। सभी देव- शक्तियाँ प्रतिष्ठित होकर आनन्दित हों- सन्तुष्ट हों। (सविता देव की ओर से कथन) तथास्तु- प्रतिष्ठित हों।

ध्यान्यप्रक्षेप

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।।

कलश-स्थापन

ॐ आ जिग्घ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरुर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

कलश में जल

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

कलश में चन्दन

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

कलश में सर्वोषधि

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामह ँ शतं धामानि सप्त च।।

कलश में दूब

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।।

कलशपर पञ्चपल्लव

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ।।

कलश में पवित्री

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

कलश में सप्तमृत्तिका

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।

कलश में सुपारी

ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ᳪ हसः।।

कलश में पञ्चरत्न

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे।

कलश में द्रव्य

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

कलश पर वस्त्र

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ सं व्ययस्व विभावसो।।

कलशपर पूर्णपात्र

ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो।।

कलश पर नारियल

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः।।

कलश में वरुण का ध्यान और आवाहन

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ स मा न आयुः प्र मोषीः।
अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण! इहागच्छ, इह तिष्ठ, स्थापयामि, पूजयामि, मम पूजां गृहाण। 'ॐ अपां पतये वरुणाय नमः'

कलश में देवी-देवताओं का आवाहन

सभी परिजन कलश में प्रतिष्ठित देव शक्तियों की हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

कलश के मुख स्थान पर विष्णु, कण्ड स्थान में रुद्र,मूल (पेंदी) स्थान में ब्रह्मा, मध्य स्थान में मातृका गण (षोडश मातृका), कुक्षि (गर्भ- पेट) स्थान में सभी सागर, सातों द्वीपों वाली धरती, ऋग् , यजु, साम और अथर्ववेद तथा छहों अङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) सभी कलश में विद्यमान हैं। यहीं (कलश मध्य में) गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिदायी- शक्ति सर्वदा निवास करती है। हे कलश ! तुममें सभी प्राणी और सभी प्रजापति ब्रह्मा हो। हे कलश देवता! आदित्यगण (१२ सूर्य), वसुगण (८ वसु), रुद्रगण, (११ रुद्र), विश्वेदेवगण (१ विश्वे देव), समस्त पितृगण आदि तुममें निवास करते हैं, जो कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं। हे जल से उत्पन्न कलश! आपकी प्रसन्नता से यह यज्ञ सम्पन्न करना चाहता हूँ। हे देव! आप यहाँ उपस्थित रहें और सदा- सर्वदा हम सब पर प्रसन्न रहें।

प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः।

नवग्रह-मण्डल-पूजन

१- सूर्य (मध्यमें गोलाकार, लाल लकड़ी, मदार)

सूर्य का आवाहन **(लाल अक्षत-पुष्प लेकर) - मदार**

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।

हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, श्रीसूर्यमावाहयामि, स्थापयामि।

२- चन्द्र (अग्निकोणमें, अर्धचन्द्र, श्वेत)

चन्द्र का आवाहन **(श्वेत अक्षत-पुष्प से) - ढाक**

ॐ इमं देवा असपत्न ꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय

महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्याइन्द्रस्येन्द्रियाय।

इममपुष्य पुत्रमपुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ एष वोमी

राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि, स्थापयामि।

३- मंगल (दक्षिणमें, त्रिकोण, लाल)

मङ्गल का आवाहन (लाल फूल और अक्षत लेकर) – खैर

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि, स्थापयामि।

४- बुध (ईशानकोणमें, हरा, धनुष)

बुध का आवाहन (पीले, हरे अक्षत-पुष्प लेकर) – अपामार्गा

ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानस्च सीदत।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधममावाहयामि, स्थापयामि।

५- बृहस्पति (उत्तरमें पीला, अष्टदल)

बृहस्पति का आवाहन (पीले अक्षत-पुष्पसे)- पीपल

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि।

६- शुक्र (पूर्वमें श्वेत, चतुष्कोण)

शुक्रका आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्पसे) - गूलर

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि।

७ - शनि (पश्चिममें, काला मनुष्य)

शनि का आवाहन (काले अक्षत-पुष्पसे) - शमी

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि।

८- राहु (नैर्ऋत्यकोणमें, काला मकर)

राहुका आवाहन (काले अक्षत-पुष्पसे) - दूर्वा

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि, स्थापयामि।

९- केतु (वायव्यकोणमें, कृष्ण खड्ग)

केतुका आवाहन (धूमिल अक्षत-पुष्प लेकर) - कुश

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि, स्थापयामि।

नवग्रह-मण्डल की प्रतिष्ठा

अस्मिन् नवग्रहमण्डले आवाहिताः सूर्यादिनवग्रहा देवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

नवग्रह-पूजन

ॐ आवाहितसूर्यादिनवग्रहेभ्यो देवेभ्यो नमः।

प्रार्थना –

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।
सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः।
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।

प्रमुख देवता मंत्र ध्यान

हरिः

शुक्लाम्बरधरं देवं, शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् , सर्वविघ्नोपशान्तये।।
सर्वदा सर्वकार्येषु, नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान्, मङ्गलायतनो हरिः।।

सप्तदेव

विनायकं गुरुं भानुं, ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ, सर्वकार्यार्थसिद्धये।।

पुण्डरीकाक्ष

मङ्गलं भगवान् विष्णुः, मङ्गलं गरुणध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः, मङ्गलायतनो हरिः।।

ब्रह्मा

त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा, सत्यलोकपितामहः।
आगच्छ मण्डले चास्मिन्, मम सर्वार्थसिद्धये।।

विष्णु

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं, मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं, सर्वलोकैकनाथम्।।

शिव

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत्कारणम्,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम्पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं, वन्दे मुकुन्दप्रियम्,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं, वन्दे शिवं शङ्करम्।।

त्र्यम्बक भगवान

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

दुर्गा

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

सरस्वती

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां, जाड्यान्धकारापहाम्।

हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं, पद्मासने संस्थिताम् ,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं, बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

लक्ष्मी

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं, जातवेदो मऽआवह।।

काली

कालिकां तु कलातीतां, कल्याणहृदयां शिवाम् ।
कल्याणजननीं नित्यं, कल्याणीं पूजयाम्यहम् ।।

गङ्गा

विष्णुपादाब्जसम्भूते, गङ्गे त्रिपथगामिनि।
धर्मद्रवेति विख्याते, पापं मे हर जाह्नवि।।

तीर्थ

पुष्करादीनि तीर्थानि, गङ्गाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि, पूजाकाले सदा मम।।

षोडशमातृका

गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।।

सप्तमातृका

कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा, सिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्याश्च, सप्तैता दिव्यमातरः।।

वास्तुदेव

नागपृष्ठसमारूढं, शूलहस्तं महाबलम् ।
पातालनायकं देवं, वास्तुदेवं नमाम्यहम् ।।

क्षेत्रपाल

क्षेत्रपालान्नमस्यामि, सर्वारिष्टनिवारकान् ।
अस्य यागस्य सिद्ध्यर्थं, पूजया राधितान् मया।।

पितृ आवाहनम्

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।। ॐ पितृभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।। १९.३६

श्री सीता राम

लोकाभिरामं रण-रङ्गधीरं राजीव-नेत्रं रघुवंश-नाथम्।
कारुण्य-रूपं करुणाकरं तं श्री रामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।

हनुमान जी

अतुलित बलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

काल भैरव ध्यानम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे।।

श्री राधा कृष्ण ध्यानम् – **हे दीनबन्धो दीनेश सर्वेस्वर नमोस्तुते, गोपेश गोपिका कान्तं राधाकान्तं नमोस्तुते।।**

त्रिवेणी ध्यानम्

त्रिवेणीं माधवं सोमं भरद्वाजं च वासुकीम्,
वन्दे अक्षयवटं शेषं प्रयागंतीर्थ नायकम्।।

सर्वदेव प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ।।

पूजनम्

आवाहनम् – **ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।**
स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।

जो सहस्त्रों सिर वाले, सहस्त्रों नेत्र वाले और सहस्त्रों चरण वाले विराट् पुरुष हैं, वे सारे ब्रह्माण्ड को आवृत करके भी दस अंगुल शेष रहते हैं।

आसन – **ॐ पुरुषऽएवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।**
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

जो सृष्टि बन चुकी है, जो बनने वाली है, यह सब विराट् पुरुष ही है। इस अमर जीव- जगत् के भी वही स्वामी हैं। जो अन्न द्वारा वृद्धि प्राप्त करते हैं, उनके भी वही स्वामी है।

पाद्य – **ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।**
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

विराट पुरुष की महत्ता अति विस्तृत है। इस श्रेष्ठ पुरुष के एक चरण में सभी प्राणी हैं और तीन भाग अनन्त अन्तरिक्ष में स्थित है।

अर्घ्य – **ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।**
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।

चार भागों वाले विराट् पुरुष के एक भाग में यह सारा संसार जड़ और चेतन विविध रूपों में समाहित हैं और इसके तीन भाग अनन्त अन्तरिक्ष में समाये हुए हैं।

आचमनम् – **ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।**
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।

उस विराट् पुरुष से यह ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ। उस विराट् से समष्टि जीव उत्पन्न हुए। वही देहधारी रूप में सबसे श्रेष्ठ हुआ, जिसने सबसे पहले पृथ्वी को, फिर शरीरधारियों को उत्पन्न किया।

स्नान – **ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत सम्भृतं सामानि जज्ञिरे।**
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।

उस सर्वश्रेष्ठ विराट् प्रकृति यज्ञ से दधियुक्त घृत प्राप्त हुआ (जिससे विराट् पुरुष की पूजा होती है) वायुदेव से सम्बन्धित पशु हरिण, गौ, अश्वादि की उत्पत्ति उस विराट् पुरुष के द्वारा ही हुई ।

दुग्धस्नान –

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम।। (यजुर्वेद १८।३६)
कामधेनुसमुद्भुतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयःस्नानं पमर्पयामि।

दधिस्नान – **ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।**
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयू ँ षि तारिषत् ।
(यजु. २३।३२)

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

घृतस्नान –**ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।**
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ।
(यजु. १७।८८)

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नान –

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।। (यजु. १३।२७-२८)

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नान –

ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम्। अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। (यजु. ९।३)

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् ।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नान

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ।।

(यजु. ३४।११)

पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नान

ॐ अ ᳬ शुना ते अ ᳬ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।। (यजु. २०।२७)

मलयाचलसम्भूतंचन्दनेन विनिःसृतम् ।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं च गृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान – **ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।**

(यजु. २४।३)

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्र – **ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।**

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः।।

(ऋग. ३।८।४)

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।

देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र – **ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमाऽसदत्स्वः।**

वासो अग्ने विश्वरूप ँ सं व्ययस्व विभावसोः।।

(यजु. ११/४०)

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिद्ध्यति।

उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं (उपवस्त्राभावे रक्तसूत्रम् समर्पयामि)।

यज्ञोपवीत –**ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।**

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दन – **ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।**

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

(यजु. १२/९८)

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षत –

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विद्र
ते हरी।।

(यजु. ३।५१)

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला – **ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।**
अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।

(यजु. १२।७७)

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वा – **ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।**
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।।

(यजु. १३।२०)

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

बिल्वपत्र –

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च।
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं देवार्पणम्।।

तुलसीपत्र –

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।।

तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्।।

सिन्दूर –

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

(यजु. १७।१५)

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीर–गुलाल आदि नाना परिमल द्रव्य –

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः।।

(यजु. २९।५१)

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् ।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्य –

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुक्मिव बन्धनान्, मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

धूप –

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितम ॐ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

(यजु. १।८)

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीप –

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। (यजु. ३।९)

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ।।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।

त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।

हस्तप्रक्षालन – **ॐ हृषीकेशाय नमः।**

नैवेद्य –

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।।

(यजु. ३१।१३)

पञ्चग्रासमुद्रा प्रदर्शनम् –

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

आचमन –**नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

ऋतुफल –

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः।।

(यजु. १२।८९)

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

आचमन – **फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

ताम्बूल – **ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।**

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

(यजु. ३१।१४)

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा –

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यजु. १३।४)

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः सादृगुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

सम्बोधन के लिए – ताम्र पात्र में गंध, अक्षत, जल, द्रव्य, दूर्वा, सुपारी, फूल हाथ में लेकर मस्तक से लगाये।

विशेषार्घ्य – **रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।**
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।
अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना –

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।।
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम, न मम।

सर्वदेव नमस्कारः

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये, सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटीयुगधारिणे नमः।।

रक्षाविधानम्

जहाँ उत्कृष्ट बनने, शुभ कार्य करने की आवश्यकता है, वहाँ यह भी आवश्यक है कि दुष्टों की दुष्प्रवृत्ति से सतर्क रहा जाय। इसीलिये रक्षाविधान किया जाता है। इसके लिये प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन बायें हाथ में पीले अक्षत लेकर खड़े हो जायें और मन्त्र के साथ निर्देशित दशों दिशाओं में चावल प्रक्षेपित करें।

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः, आग्नेय्यां गरुडध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु, नैर्ऋत्यां मधुसूदनः।।१।।
पश्चिमे चैव गोविन्दो, वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपती रक्षेद्, ऐशान्यां हि महेश्वरः।।२।।
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो, ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।
अनुक्तमपि यत्स्थानं, रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक्।।३।।
अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।४।।
अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन, यज्ञकर्म समारभे।।५।।

पूर्व दिशा में वाराह भगवान् रक्षा करें, आग्नेय में विष्णु भगवान् रक्षा करें, दक्षिण में पद्मनाभ (पश्चिम विष्णु) रक्षा करें, उत्तर में श्रीपति रक्षा करें, नैर्ऋत्य

में मधुसूदन रक्षा करें, पश्चिम में गोविन्द रक्षा करें, वायव्य में जनार्दन रक्षा करें, ईशान में महेश्वर रक्षा करें, ऊपर धाता (धारण तथा रक्षण करने वाले विष्णु) रक्षा करें, नीचे अनन्त भगवान् रक्षा करें, इसके अतिरिक्त जिन स्थानों का कथन नहीं हुआ, उसकी रक्षा परमेश्वर करें। भगवान् शिव की आज्ञा से वे सभी भूत-प्रेतगण दूर हट जायें, जो इस यज्ञ स्थल पर विद्यमान हैं और विघ्न डाला करते हैं। सभी भूत-प्रेत पिशाचगण यहाँ से सभी दिशाओं की ओर चले जाएँ। इस प्रकार सभी के अविरोध पूर्वक (बिना किसी वैर-विरोध के) मैं इस यज्ञ कृत्य को प्रारम्भ करता हूँ।

मेखलापूजन

विष्णु- (ऊपर की सफेद मेखला)

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।

समूढमस्य पा ँ सूरे स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः।

आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि। - ५.१५

ब्रह्मा पूजन।। (बीच में लाल मेखला)

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽ आवः।

स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।

ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि। - १३.३

।।रुद्र।। (नीचे की काली मेखला)

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।

ॐ रुद्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

- १६.१

कुश कण्डिका - (मेखला के नीचे चारों तरफ कुश रखें)

अग्निस्थापनम

अग्नि को ब्रह्म का प्रतिनिधि मानकर यज्ञ कुण्ड में उनकी प्रतिष्ठा की जाती है। अग्नि का स्वभाव है आगे बढ़ना निरन्तर ऊपर उठना। सभी की प्रगति की कामना से यज्ञ कुण्ड में अग्निदेव का आवाहन करें। किसी समिधा या चम्मच में, रुई की घी में डुबोई फूल बत्ती या कपूर को प्रज्वलित कर अग्नि प्रतिष्ठित करें और अग्निदेव का पञ्चोपचार विधि से पूजन करें।

ॐ भूर्भुवः स्वद्यौंरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे। अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२आ सादयादिह।- ३.५, २२.१७

ॐ भूर्भुवः स्वः वैश्वानर शाण्डिल्य गोत्र शाण्डिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरः, भूमिमातः, वरुणपितः, पश्चिमचरण, पूर्व शिर-स्कन्ध, ऊर्ध्व पाद, पातालदृष्टि, गोचर मेषध्वज, प्राङ्मुख अग्ने स्वागतो भव, भूर्भुवः स्वः वरदनामाग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। गन्धाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

(हे अग्निदेव!) आप भूः (पृथिवीलोक में अग्निरूप), भुवः (अन्तरिक्ष में विद्युत् रूप) एवं स्वः (द्युलोक में सूर्यरूप) में सर्वत्र विद्यमान हैं। देवताओं के निमित्त यज्ञ सम्पादन के लिए उत्तम स्थान प्रदान करने वाली हे पृथिवि! हम देवों को हवि प्रदान करने के लिए आपके ऊपर बनी हुई यज्ञवेदी पर अग्निदेव को प्रतिष्ठित करते हैं। (इस अग्निस्थापन के द्वरा) हम (पुत्र-पौत्रादि तथा इष्ट मित्रों से युक्त होकर) द्युलोक के समान सुविस्तृत तथा (यश, गौरव, ऐश्वर्यादि से युक्त होकर) पृथिवी के समान महिमावान् हों। हवि को देवों तक के जाने वाले देवदूत रूप अग्निदेव को हम अपने समक्ष स्थापित करते हैं और उन्हीं से प्रार्थना करते हैं कि वे अन्य देवताओं को भी लाकर यहाँ उपस्थित करें।

गायत्रीस्तवनम्

जड़ चेतन सभी में प्राण का सञ्चार करने वाले सविता देवता हम सभी में दिव्य प्राण का सञ्चार करें, इसी भाव से सविता देवता का स्तवन करें।

शुभ ज्योति के पुञ्ज, अनादि, अनुपम। ब्रह्माण्डव्यापी आलोककर्त्ता।
दारिद्र्य, दुःख भय से मुक्त कर दो। पावन बना दो हे देव सविता !।।१।।

यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं, रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम् ।
दारिद्र्य-दुःखक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।१।।
यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितं, विप्रैः स्तुतं मानवमुक्तिकोविदम्।
तं देवदेवं प्रणमामि भर्गं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।२।।
यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं, त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्।
समस्त-तेजोमय-दिव्यरूपं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।३।।
यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं, धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् ।
यत् सर्वपापक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।४।।
यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं, यदृग्यजुः सामसु सम्प्रगीतम्।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।५।।
यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति, गायन्ति यच्चारण सिद्धसङ्घाः।
यद्योगिनो योगजुषां च सङ्घाः, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।६।।
यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं, ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके।
यत्काल-कालादिमनादिरूपं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।७।।
यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखास्यं, यदक्षरं पापहरं जनानाम् ।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।८।।
यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धं, उत्पत्ति-रक्षा प्रलयप्रगल्भम् ।
यस्मिन् जगत्संहरतेऽखिलं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।९।।
यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः, आत्मा परंधाम विशुद्धतत्त्वम्।

सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।१०।।

यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति, गायन्ति यच्चारण-सिद्धसंघाः।

यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।११।।

यन्मण्डलं वेद विदोपगीतं, यद्योगिनां योगपथानुगम्यम् ।

तत्सर्ववेदं प्रणमामि दिव्यं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।१२।।

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल प्रकाश उत्पन्न करने वाला, विशाल रत्नों की तीव्र प्रभा वाला, अनादि रूप वाला तथा दरिद्रता और दु:ख को नष्ट करने वाला है, वह मुझे पवित्र करे।

ऋषि देवताओं से नित्य पूजित। हे भर्ग भवबन्धन मुक्तिकर्त्ता ! ।

स्वीकार कर लो वन्दन हमारा। पावन बना दो हे देव सविता!।।१।।

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल देवगणों से भली-भाँति पूजित है, ब्राह्मणों के द्वारा मानव- मुक्ति दाता के रूप में स्तुत है, उस देवों के देव भर्ग (तेज) को मैं प्रणाम करता हूँ, वह मुझे पवित्र करे।

हे ज्ञान के घन, त्रैलोक्य पूजित! पावन गुणों के विस्तारकर्त्ता।

समस्त प्रतिभा के आदिकारण। पावन बना दो हे देव सविता!।।३।।

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल सभी लोगों द्वारा पूजित है, इस मर्त्यलोक में ज्योति-स्वरूप है तथा जो देशकाल से परे अनादि रूप वाला हैं, वह मुझे पवित्र करें।

हे विष्णु ब्रह्मादि द्वारा प्रचारित! हे भक्तपालक, हे पापहर्त्ता!।।

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल ब्रह्मा, विष्णु के मुख मण्डल सदृश है, जो अक्षर (नष्ट न होने वाला) तथा लोगों के पापों को दूर करने वाला है, जो काल और कल्प के क्षय का कारण भी है वह मुझे पवित्र करे।

हे विश्वमण्डल के आदिकारण! उत्पत्ति-पालन-संहारकर्त्ता।

होता तुम्हीं में लय यह जगत् सब। पावन बना दो हे देव सविता!।।

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल सृजन के लिए सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रलयकाल में समाहित –लीन हो जाती हैं, वह मुझे पवित्र करे।

हे सर्वव्यापी, प्रेरक नियन्ता! विशुद्ध आत्मा, कल्याणकर्त्ता।

शुभ योग पथ पर हमको चलाओं। पावन बना दो हे देव सविता!।।

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल सर्वगत, सर्वत्र संव्याप्तविष्णु की आत्मा है, सर्वशुद्ध एवं पर (श्रेष्ठ) धाम है। जो योग मार्ग द्वारा सूक्ष्म अन्तः करण से ज्ञात होने वाला है, वह मुझे पवित्र करे।

हे ब्रह्मनिष्ठों से आदिपूजित! वेदज्ञ जिसके गुणगानकर्त्ता।

सद्भावना हम सबमें जगा दो। पावन बना दो हे देव सविता!।।

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल ब्रह्मज्ञानियों द्वारा प्रशंसित है, जिसका चारण और सिद्ध समुदायों द्वारा गुण- गान किया जाता है तथा वेदज्ञानी जिस मण्डल को नित्य स्मरण करते हैं, वह मुझे पवित्र करे।

हे योगियों के शुभ मार्गदर्शक! सद्ज्ञान के आदि सञ्चारकर्त्ता।

प्रणिपात स्वीकार लो हम सभी का। पावन बना दो हे देव सविता!।।

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल वेदज्ञानियों द्वारा गेय है तथा योगियों द्वारा योग मार्ग से प्राप्तव्य है, उस सर्वज्ञ दिव्यतत्त्व को हम प्रणाम करते है हैं, वह मुझे पवित्र करे।

।। अग्निप्रदीपनम् ।।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

- १५.५४, १८.६१

।।समिधाधानम्।।

१- ॐ अयन्तऽइध्मऽआत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व। चेद्ध वर्धय चास्मान्प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।

- आश्व.गृ.सू. १.१० इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम।

२- ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।।

– ३.१

३- ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम।।

– ३.२

४- ॐ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदं अग्नये अङ्गिरसे इदं न मम।।

– ३.३

।।जलप्रसेचनम् ।।

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व।। (इति पूर्वे) गो.गृ.सू. १.३.१
ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व।। (इति पश्चिमे) गो.गृ.सू. १.३.२
ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व।। (इति उत्तरे) गो.गृ.सू. १.३.३

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः, केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाच नः स्वदतु।।

(इति चतुर्दिक्षु) – ११.७

।।आज्याहुतिः।।

१. ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।।- १८.२८

२. ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदं न मम।।

३. ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।।

४. ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम।।

५. ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।।

६. ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम।।

७. ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।।

– गो.गृ.सू. १.८.१५

आहुतियों में गणेश, गौरी, नवग्रह आहुति समिधा के साथ नाम

(गृह-समिधा नाम)

महामंत्राहुति

२४ गायत्री (गायत्री मंत्र के २४ देवताओं की आहुतियाँ

१. गणेश गायत्री

ॐ एक दन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।

२. नृसिंह गायत्री

ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे, वज्रनखाय धीमहि। तन्नो नरसिंहः प्रचोदयात्।

३. विष्णु गायत्री

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

४. शिव गायत्री

ॐ पञ्चवक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोयदयात्।

५. कृष्ण गायत्री

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि। तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।

६. राधा गायत्री

ॐ वृषभानुजायै विद्महे, कृष्ण प्रियायै धीमहि। तन्नो राधा प्रचोदयात्।

७. लक्ष्मी गायत्री

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे, विष्णुप्रियायै धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।

८. अग्नि गायत्री

ॐ महाज्वालाय विद्महे, अग्निदेवाय धीमहि। तन्नो अग्निः प्रचोदयात्।

९. इन्द्र गायत्री

ॐ सहस्त्रनेत्राय विद्महे, वज्रहस्ताय धीमहि। तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात्।

१०. सरस्वती गायत्री

ॐ सरस्वत्यै विद्महे, ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि। तन्नो देवीः प्रचोदयात्।

११. दुर्गा गायत्री

ॐ गिरिजायै च विद्महे, शिवप्रियायै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

१२. हनुमान गायत्री

ॐ अञ्जनीसुताय विद्महे, वायुपुत्राय धीमहि। तन्नो मारुति प्रचोदयात्।

१३. पृथ्वी गायत्री

ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे, सहस्त्रमूर्त्यै धीमहि। तन्नो पृथ्वी प्रचोदयात्।

१४. सूर्य गायत्री

ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय च धीमहि। तन्नः सूर्य्यः प्रचोदयात्।

१५. राम गायत्री

ॐ दाशरथये विद्महे, सीता पतये धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात्।

१६. सीता गायत्री

ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे, भूमिजायै धीमहि। तन्नः सीता प्रचोदयात्।

१७. चन्द्र गायत्री

ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे, अमृत्तत्वाय धीमहि। तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।

१८. यम गायत्री

ॐ सूर्य पुत्राय विद्महे, महाकालाय धीमहि। तन्नो यमः प्रचोदयात् ।

१९. ब्रह्मा गायत्री

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे, हंसारूढाय धीमहि। तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ।

२०. वरुण गायत्री

ॐ जलेशाय विद्महे, महार्णवाय धीमहि। तन्नो वरुणः प्रचोदयात् ।

२१. हयग्रीव गायत्री

ॐ वाणीश्वराय विद्महे, हयाय धीमहि। तन्नो हयग्रीवः प्रचोदयात् ।

२२. हंस गायत्री

ॐ परहंसाय विद्महे, महाहंसाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

२३. तुलसी गायत्री

ॐ महातुलस्यै विद्महे, विष्णुप्रियायै धीमहि। तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।

२४. महाशक्ति गायत्री

ॐ सजल श्रद्धायै विद्महे, महाशक्त्यै च धीमहि। तन्नो भगवती प्रचोदयात् ।

२५. महाकाल गायत्री

ॐ प्रखर प्रज्ञाय विद्महे, महाकालाय धीमहि। तन्नः श्रीरामः प्रचोदयात्।

विशेष देवता की विशेष आहुतियाँ (प्रधान देव)

सर्वदेव नाममन्त्रैः आहुति

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां स्वाहा।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां स्वाहा।

ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां स्वाहा।

ॐ शचीपुरन्दराभ्यां स्वाहा।

ॐ कुलदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ इष्टदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ ग्रामदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ स्थानदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ वास्तुदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो स्वाहा।

ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो स्वाहा।

ॐ सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो स्वाहा।

ॐ एतत्कर्मप्रधान श्रीगायत्रीदेव्यैः स्वाहा।

ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

महामृत्युंजय मंत्र आहुति

ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ।।

स्विष्टकृत्होमः

ॐ यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदं अग्नये स्विष्टकृते इदं न मम।।

पूर्णाहुतिः

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।स्वाहा।।
ॐ सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।।

वसोर्धारा

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।

नीराजनम् आरती

ॐ इद ँ हविः प्रजननं मेऽअस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।

(यदु. १९।४८)

ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा ँ सि बृहती वि तिष्ठस् आ त्वेषं वर्तते तमः।।

(यदु. ३४/३२)

आर्तभाव से की गई प्रार्थना ही आरती है। देवत्व का चतुर्दिक् गुणगान हो; ताकि सभी लोगों को उसकी श्रेष्ठता से प्रेरणा और लाभ मिल सके, देव प्रतिमाओं की आरती उतारने का यही उद्देश्य प्रत्येक कुण्ड से एक –एक प्रतिनिधि आरती की थाली में रखे दीप को प्रज्वलित कर, तीन बार जल घुमाकर यज्ञभगवान् और देव प्रतिमाओं की आरती उतारें। आरती के पश्चात् पुनः तीन बार जल घुमाकर सबको आरती प्रदान करें।

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति, परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा, तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।।
ॐ यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः, स्तुन्वन्ति दिव्यै स्तवै,
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदै, र्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः, देवाय तस्मै नमः।।

जिसे वेदान्त जन परब्रह्म कहते हैं तथा अन्य लोगों (सांख्यवादियों, नैयायिकों, मीमांसकों आदि) द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति के जिस परमकारण को 'परमप्रधान पुरुष' अथवा 'ईश्वर' कहा गया है, उस विघ्न- विनाशक परमात्मा को नमस्कार है।

जिस (परमात्मा) की ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र, मरुदादिगण दिव्य स्तोत्रों से स्तुति करते हैं। साम गान करने वाले अङ्ग, पद, क्रम और उपनिषदों सहित वेदमन्त्रों के साथ जिसका स्तवन करते हैं, जिनको योगीजन ध्यानावस्था में तन्मय होकर मन से देखा करते हैं, देवता और अंसुर भी जिनको नहीं जान पाते, उन देव (परमात्मा) को नमस्कार है।

।।पुष्पाञ्जलिः।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
ॐ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।। - ३१.१६

।।घृतावघ्राणम्।।

सभी याजक प्रणीता पात्र में '**इदं न मम**' के साथ टपकाये घृत और जल को दाहिने हाथ की उँगलियों के अग्र भाग में लें, दोनों हाथ की हथेलियों में मलें, मन्त्र के साथ यज्ञ कुण्ड की ओर रखें। बाद में गायत्री मन्त्र के साथ सूँघें और कमर के ऊपरी हिस्से में लगाये। भावना करें यज्ञीय ऊर्जा को आत्मसात् कर रहे हैं।

ॐ तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाहि।

ॐ आयुर्दाऽअग्नेऽसि आयुर्मे देहि।

ॐ वर्चोदाऽअग्नेऽसि, वर्चो मे देहि।

ॐ अग्ने यन्मे तन्वाऽ ऊनन्तन्मऽआपृण।।

ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु।

ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु।।

ॐ मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजौ।

– पा.गृ.सू. २.४.७-८

।।भस्मधारणम्।।

मृत्यु जीवन का एक सुनिश्चि सत्य है। वह कभी भी आ सकती है। अतः मन, वचन और कर्म से ऐसे विवेकयुक्त कार्य करें; ताकि जीवन को सार्थक बना सकें, सुरदुर्लभ मनुष्य जीवन व्यर्थ न जाये। इन्ही भावों से यज्ञभस्म को अनामिका उँगली में लेकर मन्त्र के साथ मस्तक, कण्ड भुजा और ह्दय से लगायें।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायाम् ।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं इति दक्षिणबाहुमूले।

ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं इति हृदि।

जो जमदग्नि की (बाल्य, यौवन, वृद्ध) त्रिविध आयु (तेजस्वी जीवन) है, जो कश्यप की तीन अवस्थाओं वाली आयु है तथा जो देवताओं की तीन अवस्थाएँ हैं, उसको हम प्राप्त करें।

अभिषेक-निर्धारित मात्रा में कन्याएँ या संस्कारवान् व्यक्ति कलश लेकर मन्त्रोच्चार के साथ साधकों का अभिषेक करें। भावना करें कि ईश्वरीय ऋषिकल्प जीवन के अनुरूप स्थापनाओं,बीजरूप प्रवृत्तियों को सींचा जा रहा है, समय पाकर वे फूलें- फलेंगी। जीवन के श्रेष्ठतम रस में भागीदारी के लिए परमात्म

सत्ता से प्रार्थना की जा रही है, अनुदानों को धारण किया जा रहा है। अभिषेक के बाद अग्निस्थापना करके विधिवत् यज्ञ किया जाए। स्विष्टकृत् के पूर्व सात विशेष आहुतियाँ दी जाएँ। भावना की जाए कि युग देवता एक विशाल यज्ञ चला रहे हैं। उस यज्ञ में समिधा, द्रव्य बनकर हम भी सम्मिलित हो रहे हैं, उनसे जुड़कर हमारा जीवन धन्य हो रहा है।

प्रव्रज्या- परिव्राजक का काम है चलते रहना । रुके नहीं, लक्ष्य की ओर बराबर चलता रहे, एक सीमा में न बँधे, जन-जन तक अपने अपनत्व और पुरुषार्थ को फैलाए। जो परिव्राजक लोकमङ्गल के लिए सङ्कीर्णता के सीमा बन्धन तोड़कर गतिशील नहीं होता, सुख-सुविधा छोड़कर तपस्वी जीवन नहीं अपनाता, वह पाप का भागीदार होता है। यज्ञ की चार परिक्रमाएँ चरैवेति मन्त्रों के साथ करें। भावना करें। कि हम सच्चे परिव्राजक बनकर गतिशीलों को मिलने वाले दिव्य अनुदानों के उपयुक्त सत्पात्र बन रहे हैं।

इसके बाद यज्ञ समापन पूर्णाहुति आदि उपचार कराये जाएँ। अन्त में मन्त्रों के साथ पुष्प अक्षत की वर्षा करें, शुभ कामना- आशीर्वाद दें।

।।क्षमा प्रार्थना।।

ॐ आवाहनं न जानामि, नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर!।।१।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे।।२।।
यदक्षरपदभ्रष्टं, मात्राहीनं च यद् भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर!।।३।।
यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या, तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति, सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।४।।
प्रमादात्कुर्वतां कर्म, प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः, सम्पूर्णं स्यादितिश्रुतिः।।५।।

।।साष्टाङ्गनमस्कारः।।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये, सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटियुगधारिणे नमः।।

।।शुभकामना।।

ॐ स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां, न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु।।१।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ।।२।।
श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां, विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम् ।
तेज मायुष्यमारोग्यं, देहि मे हव्यवाहन।।३।। - लौग. स्मृ.

।। शान्ति-अभिषिञ्चनम् ।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु। - ३६.१७

।। सूर्याघ्र्यदानम् ।।

ॐ एहिसूर्य सहस्त्रांशो, तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या, गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।
ॐ सूर्याय नमः, आदित्याय नमः, भास्कराय नमः।

।।प्रदक्षिणा।।

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषा ँ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

ॐ यानि कानि च पापानि, ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु, प्रदक्षिण पदे-पदे।

।। विसर्जनम् ।।

ॐ गच्छ त्वं भगवन्नग्ने, स्वस्थाने कुण्डमध्यतः।
हुतमादाय देवेभ्यः, शीघ्रं देहि प्रसीद मे।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ, स्वस्थाने परमेश्वर!।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः, तत्र गच्छ हुताशन!।।
यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं, पुनरागमनाय च।।

।। लघुसर्वतोभद्र वेदिका पूजन ।।

(१) गणेश (विवेक) पीला

ॐ गणानां त्वा गणपति.. हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। ॐ गणपतये नमः। आवा.स्था.ध्या.

(२) गौरी (तपस्या) हरा

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।। ॐ गौर्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(३) ब्रह्मा (निर्माण) लाल

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाःसतश्च योनिमसतश्च वि वः। ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि स्थापयामि, ध्यायामि।।

९४) विष्णु (ऐश्वर्य) सफेद

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(५) रुद्र (दमन) लाल

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ रुद्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(६) गायत्री (ऋतम्भरा प्रज्ञा) पीला

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप् पङ्क्त्या सह। बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचिभिः शम्यन्तु त्वा।। ॐ गायत्र्यै नमः। आवा.स्था.ध्या.

(७) सरस्वती बुद्धि (शिक्षा) लाल

ॐ पावकाः नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः। ॐ सरस्वत्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(८) लक्ष्मी (समृद्धि) सफेद

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाण सर्वलोकं मऽ इषाण। ॐ लक्ष्म्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(९) दुर्गा शक्ति (संगठन) लाल

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमं अरातीयतो नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।। ॐ दुर्गायै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(१०) पृथ्वी (क्षमा) सफेद

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः। ॐ पृथिव्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(११) अग्नि (तेजस्विता) पीला

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्। ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(१२) वायु (गतिशीलता) सफेद

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः। ॐ वायवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(१३) इन्द्र (व्यवस्था) लाल

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव.. शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ इन्द्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(१४) यम (न्याय) सफेद

ॐ सुगन्नुपन्थां प्रदिशन्नऽएहि ज्योतिष्मध्येह्यजरन्नऽआयुः। अपैतु मृत्युममृतं मऽआगात्वैवस्वतोनो ऽ अभयं कृणोतु। ॐ यमाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(१५) कुबेर (मितव्ययिता) काला

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ कुबेराय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(१६) अश्विनीकुमार (आरोग्य) पीला

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(१७) सूर्य (प्रेरणा) काला

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। ॐ सूर्याय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(१८) चन्द्रमा (शान्ति) लाल

ॐ इमं देवाऽ असपत्नं ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ एष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा। ॐ चन्द्रमसे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(१९) मङ्गल (कल्याण) सफेद

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽ अयम्। अपा ँ रेता ँ

सि जिन्वति। ॐ भौमाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(२०) बुध (सन्तुलन) हरा

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ঁ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।। ॐ बुधाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(२१) बृहस्पति (अनुशासन) पीला

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।
उपयामगृहीतोसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा।
ॐ बृहस्पतये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(२२) शुक्र (संयम) हरा

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ঁ सुक्रमन्धसइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।। ॐ शुक्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(२३) शनिश्चर (तितिक्षा) लाल

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनिश्चराय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(२४) राहु (संघर्ष) पीला

ॐ कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। ॐ राहवे नम;। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(२५) केतु (साहस) लाल

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽ अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। ॐ केतवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(२६) गङ्गा (पवित्रता) सफेद

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित्।। ॐ गङ्गायै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(२७) पितृ (दान) पीला

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।। ॐ पितृभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(२८) इन्द्राणी (श्रमशीलता) सफेद

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽ उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व।। ॐ इन्द्राण्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(२९) रुद्राणी (वीरता) काला

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः अघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि। ॐ रुद्राण्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(३०) ब्रह्माणी (नियमितता) पीला

ॐ इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः। ॐ ब्रह्माण्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(३१) सर्प (धैर्य) काला

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि, तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(३२) वास्तु (कला) हरा

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

(३३) आकाश (विशालता) नीला

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा। ॐ आकाशाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

पुरुषसूक्तम्

हरिः ओऽम् सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
सभूमि ६ सर्व्वतस्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।१।।

पुरुषऽएवेद ६ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्व्यम्।
उतामृतत्व स्येशानो यदन्नेनाति-रोहति।।२।।

एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोस्य व्विश्श्वा-भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।३।।

त्रिपादूर्ध्व ऽऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा-भवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ् व्यक्क्रा मत्साशनानशनेऽअभि।।४।।

ततो व्विराडजायत व्विराजोऽअधि-पूरुषः।
सजातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः।।५।।

तस्माद्यज्ञात् सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।।६।।

तत्माद्यज्ञात् सर्व्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँ सि जज्ञिरे तम्माद्यजुस्तस्स्मादजायत।।७।।

तस्मादश्श्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्म्मात् तस्म्माज्जाता ऽअजावयः।।८।।

तं यज्ञं बर्हिषि प्प्रौक्षन् पुरुषञ्जातमग्ग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये।।९।।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्च्येते।।१०।।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्न्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रोऽअजायत।।११।।

चन्द्रमा-मनसो जातश्च्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।१२।।
नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽअकल्प्पयन्।।१३।।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्न्वत।
व्वसन्तो ऽस्यासीदाज्ज्यङ् ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।१४।।
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञन्तन्न्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्।।१५।।
यज्ञेन यज्ञमय-जन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्न्यासन्।
तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्तिदेवाः।।१६।।

रुद्र सूक्त

हरिःॐ भूर्भुवः स्वः, नमस्ते रुद्द्र मन्न्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः।
बाहुब्भ्यामुत ते नमः।।१।।
या ते रुद्द्र शिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी।
तया नस्त न्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।।
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ꣳ सीः पुरुषं जगत्।।३।।
शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाऽच्छा व्वदामसि।
यथा नः सर्व्व मिज्जगदयक्ष्म ꣳ सुमना ऽअसत्।।४।।
अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक्।
अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव।।५।।
असौ यस्ताम्म्रोऽअरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैन ꣳ रुद्द्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः
सहस्त्रशोऽवैषा ꣳ हेड ऽईमहे।।६।।

असौ योऽवसर्प्पति नीलग्रीवो व्विलोहितः।
उतैनं गोपा ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः
स दृष्ट्टो मृडयाति नः।।७।।

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अऽस्य सत्त्वानो ऽहन्तेब्भ्योऽकरं नमः।।८।।

प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयो–राक्न्योंज्ज्यम्।
याश्श्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवो व्वप।।९।।

व्विज्ज्यं धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२।।
ऽउत। अनेशन्नस्य या ऽइषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।१०।।

या ते हेतिर्म्मीढुष्टमहस्ते बभूव ते धनुः।
तया ऽस्म्मान्विश्श्वतस्त्वम-यक्ष्मया परिभुज।।११।।

परि ते धन्न्वनो हेतिरस्म्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः।
अथो य ऽइषुधिस्तवारे ऽअस्म्मन्निधेहि तम्।।१२।।

अवतत्त्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्त्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य्य शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।।१३।।

नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्ण्णवे।
उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यां तव धन्न्वने ।।१४।।

मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भक म्मा न
ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्।
मा नो व्वधीः पितरं मोत मातरम्मा नः
प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्र रीरिषः।।१५।।

मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो
गोषु मा नो ऽअश्श्वेषु रीरिषः।
मा नो व्वीरान्नुद्र भामिनो
व्वधीर्हविष्म्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।१६।।

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण-रजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१।।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।।

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।४।।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं, श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनीमीं शरणमहं प्रपद्ये, अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।५।।

आदित्य-वर्णे तपसोऽधिजातो, वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु, मायान्तरा याश्च बाह्या ऽअलक्ष्मीः।।६।।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७।।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम् अलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिम् असमृद्धिञ्च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्।।८।।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।।

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव-कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म-मालिनीम्।।११।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्म-मालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१३।।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेम-मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवाह।।१४।।

तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्च-दशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

---o---

जन्मदिवस संस्कार

।।विशेष कर्मकाण्ड।।

।।पञ्चतत्त्व पूजन।।

जन्मदिन संस्कार यज्ञ के साथ ही मनाया जाना चाहिए। अन्तः करण को प्रभावित करने की यज्ञ की अपनी क्षमता विशेष है; परन्तु चूँकि इसे जन-जन का आन्दोलन बनाना है, इसलिए यदि परिस्थितियाँ अनुकूल न हों, तो केवल दीपयज्ञ करके भी जन्मदिन संस्कार कराये जो सकते हैं। नीचे लिखी व्यवस्थाएँ पहले से बनाकर रखी जाएँ।

क्रिया और भावना

ॐ श्रेयसां पथे चरिष्यामि।

पृथ्वी -

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां

नो भरीमभिः।। ॐ पृथिव्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। - ८.३२

जल

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानः तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा नऽ आयुः प्रमोषीः।।
ॐ वरुणाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। - १८.४९

अग्नि

ॐ त्वं नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा.. सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।।
ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। - २१.३

वायु

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर.. सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।
ॐ वायवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। - २७.२८

आकाश

ॐ या वां कशा मधुमत्यात्श्विना सूनृतावती।
तया यज्ञं मिमिक्षतम् ।
उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां, त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा।।
ॐ आकाशाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।
-७.११

पञ्च तत्त्व पूजन के लिए चावल की पाँच छोटी ढेरियाँ पूजन वेदी पर बना

देनी चाहिए। पाँच तत्त्वों के लिए पाँच रङ्ग के चावल भी रँगकर अलग-अलग छोटी डिबियों या पुड़ियों में रखे जा सकते हैं। उनकी रङ्गीन ढेरियाँ लगा देने से शोभा और भी अच्छी बन जाती है।

तत्त्वों के क्रम और रङ्ग रस प्रकार हैं- १.पृथ्वी-हरा २.वरुण-कला, ३.अग्नि -लाल, ४.वायु-पीला और ५.आकाश- सफेद। इसी क्रम से ढेरियाँ लगाकर रखनी चाहिए।

।।दीपदान।।

जन्मोत्सव के लिए दीपक बनाकर रखें जाएँ। जितने वर्ष पूरे किये हो, उतने छोटे दीपक तथा नये वर्ष का थोड़ा बड़ा दीपक बनाया जाए। दीपक आटे के भी बनाये जा सकते हैं और मिट्टी के भी रखे जा सकते हैं। अभाव में मोमबत्तियों के टुकड़े भी प्रयुक्त किये जा सकते हैं, उन्हें थाली यै ट्रे में सुन्दर आकारों में सजाकर रखना चाहिए ।व्रत धारण में क्या व्रत लिया जाना है? इसकी चर्चा पहले से ही कर लेनी चाहिए।

ॐ परमार्थमेव स्वार्थ मनिष्ये।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योर्तिज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा। - ३.९

।।व्रतधारण।।

जिस प्रकार जन्मदिन के अवसर पर कोई बुराई छोड़ने और अच्छाई अपनाने से सम्बन्ध में प्रतिज्ञाएँ की जाती हैं, उसी तरह विवाह दिवस के उपलक्ष में पतिव्रत और पत्नीव्रत को परिपुष्ट करने वाले छोटे-छोटे नियमों को पालन करने की कम से कम एक-एक प्रतिज्ञा इस का अशिष्ट एवं लघुता प्रकट करने वाला सम्बोधन न करना जैसी प्रतिज्ञा तो आसानी से ली जा सकती है।

ॐ महत्त्वाकांक्षां सीमितं विधास्यामि।

ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम् ।

तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात् सत्यमुपैमि।। ओ३म् अग्नये नमः।।१।।
ओ३म् वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। ओ३म् वायवे नमः।।२।।
ओ३म् सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम् ।
तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। ओ३म् सूर्याय नमः।।३।।
ओ३म् चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। ओ३म् चन्द्राय नमः।।४।।
ओ३म् व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। ओ३म् इन्द्राय नमः।।५।।
– मं. ब्रा. १.६.९-१३

विशेष आहुति

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुक्मिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा।।
इदं महामृत्युञ्जयाय इदं न मम। – ३.६०, ऋग्वेद ७.५९.१२

विवाह दिवस संस्कार

सङ्कल्प

.... नामाऽहं दाम्पत्य जीवनस्य पवित्रता-मर्यादयोः रक्षणाय त्रुटीनाञ्च प्रायश्चित्त करणाय उज्ज्वलभविष्य हेतवे स्व उत्तरदायित्व परिपालनाय सङ्कल्पमहं करिष्ये।

१. ओ३म् अधिकार अपेक्षाया कर्त्तव्यं प्रधानं मनिष्ये।
ओ३म् परिधास्यै यशोधास्यै, दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि।

शतं च जीवामि शरदः, पुरूचीरायस्पोषमभि संव्ययिष्ये।।

२. ॐ यशसा माद्यावापृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पती।

यशो भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम् ।।

–पार.गृ.सू. २.६.२१, मा.गृ.सू. १.९.२७

३. ॐ परस्परं सम्भावयिष्यामि।

ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनुपवमानो वा।

हिरण्यपर्णो वै कर्णः स त्वा मन्मनसां करोत्वसौ।।

– पा.गृ.सू. १.४.१५

५. ॐ कुटुम्बं आदर्शं विधास्यामि।

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु।

मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ।।

– पार.गृ.सू. १.८.८

७. ॐ द्विशरीरं एकप्राणं भविष्यामि।

ॐ समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। – अथर्व. ६.६४.३

---o---

यज्ञ महिमा गीत

यज्ञ रूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।

छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए।।

वेद की बोलं ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।

हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें।।

अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ पर उपकार को।

धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।

नित्य श्रद्धा-भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।
कामना मिट जाए मन से, पाप अत्याचार की।
भावनाएँ शुद्ध होवें, यज्ञ से नर-नारि की।।
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिए।
वायु-जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किए।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदं न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो।।
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणारूप करुणा, आपकी सब पर रहे।।
यज्ञ रूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए।।

----०----

गायत्री माता की आरती

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
आदिशक्ति तुम अलख-निरंजन जग पालनकर्त्री।
दुःख-शोक-भय-क्लेश-कलह-दारिद्र्य दैन्यहर्त्री।। जयति.
ब्रह्मरूपिणी प्रणत पालिनी, जगद्धातृ अम्बे।
भवभयहारी जन-हितकारी, सुखदा जगदम्बे।। जयति.
भय-हारिणी भव-तारिणि अनघे, अज आनन्दराशी।
अविकारी अघहरी अविचलित, अमले अविनाशी।। जयति.
कामधेतु सत्-चित् आनन्दा, जय गङ्गा गीता।
सविता की शाश्वती शक्ति तुम सावित्री सीता।। जयति..
ऋग्, यजु, साम, अथर्व प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्त्रार सुषुम्ना, शोभा गुण-गरिमे।। जयति..

स्वाहा स्वधा शची ब्रह्माणी, राधा रुद्राणी।
जय सतरूपा वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी।। जयति..
जननी हम हैं, दीन-हीन, दुःख दारिद के घेरे।
यद्यपि कुटिल कपटी कपूत, तऊ बालक हैं तेरे।। जयति..
स्नेह सनी करुणामयि माता, चरण शरण दीजै।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै।। जयति..
काम-क्रोध मद-लोभ-दम्भ-दुर्भाव-द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये।। जयति..
तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि-पुष्टि त्राता।
सत मारग पर हमें चलाओ, जो है सुख दाता।। जयति..
जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।

❑❑❑

गणेशजी की आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।
एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी।
माथे पर तिलक सोहे मूसे की सवारी।।
पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा।।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।
अन्धे को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।।

'सूर' श्याम शरण आए सफल कीजे सेवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।

❑❑❑

श्री जगदीश्वर भगवान विष्णु जी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे।। ॐ जय०।।
जो ध्यावै फल पावै, दुःख विनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ॐ जय०।।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किसकी।। ॐ जय०।।
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ॐ जय०।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्त्ता।
मैं मूरख खल कामी , कृपा करो भर्ता।। ॐ जय०।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती।
किस विधि मिलूँ दयामय मैं तुमको कुमती।। ॐ जय०।।
दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ॐ जय०।।
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा।। ॐ जय०।।
जगदीश्वर की आरती जो नर नित गावै।
रोग शोक दुख विगलत सुखसम्पति पावे।। ॐ जय०।।

❑❑

त्रिगुणेश्वर भगवान शिव जी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा।।१।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे ।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ।।२।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन-जन मोहै ।।३।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमालाधारी ।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ।।४।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अङ्गे।
सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक सङ्गे।।५।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
कर मध्ये सुकमण्डल चक्र त्रिशूल धर्त्ता।
जगकर्त्ता जगहर्त्ता जगपालनकर्त्ता ।।६।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ।।७।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी वाञ्छित फल पावै।।८।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

❑❑

जगत जननी भगवती दुर्गा जी की आरती

जगजननी जय, जय, माँ जगजननी जय, जय।
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय जय।। माँ जग०।।
तू ही सत चित सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर भूपा ।।१।। माँ जग०।।
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी ।।२।। माँ जग०।।
अविकारी अघहारी, अकल, कलाधारी ।
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर संहारकारी ।।३।। माँ जग०।।
तू विधिवधू, रमा तू, उमा महामाया ।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ।।४।। माँ जग०।।
राम, कृष्ण, तू सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वाञ्छा-कल्पद्रुम, हारिणि सब-बाधा ।।५।। माँ जग०।।
दशविद्या, नवदुर्गा, नाना-शस्त्रकरा ।
अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव रूप धरा ।।६।। माँ जग०।।
तू परधाम-निवासिनि, महा-विलासिनि तू।
तू ही श्मशान-विहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू।।७।। माँ जग०।।
सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट-स्वरूपा, प्रलयमयी धारा ।।८।। माँ जग०।।
तू ही स्नेह सुधामयि, तू अति गरलमना ।
रत्नविभूषित तू ही तू ही अस्थि-तना ।।९।। माँ जग०।।
मूलाधार-निवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे ।
कालातीता काली, कमला तू वरदे ।।१०।। माँ जग०।।
शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी ।
भेद-प्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी ।।११।। माँ जग०।।
हम अति दीन दुखी मां ! विपत-जाल घेरे ।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ।।१२।। माँ जग०।।
निज स्वभाव-वश जननी ! दयादृष्टि कीजै ।
करुणा कर करुणामयि ! चरण-शरण दीजै।।१३।। माँ जग०।।

गंगा जी की आरती

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता ।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।।

चंद्र सी जोत तुम्हारी, जल निर्मल आता ।
शरण पडें जो तेरी, सो नर तर जाता।।
।।ॐ जय गंगे माता..।।

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता ।
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता।।
।। ॐ जय गंगे माता..।।

एक ही बार जो तेरी, शारणागति आता ।
यम की त्रास मिटा कर, परमगति पाता।।
।। ॐ जय गंगे माता..।।

आरती मात तुम्हारी, जो जन नित्य गाता ।
दास वही सहज में, मुक्त्ति को पाता।।
।। ॐ जय गंगे माता..।।

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता ।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।।

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता ।

❑❑❑

श्रीहनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गरिविर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झाँपै।।१।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये।।२।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज सँवारे।।३।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।४।।
बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे।
सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।।५।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अञ्जना माई।
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परमपद पावै।।६।।
लंक विध्वंस किये रघुराई। तुलसीदास प्रभु कीरत गाई।
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।७।।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।
।। ॐ शान्तिः ।। शान्तिः ।। शान्तिः ।।
सुशान्तिर्भवतु ।। हरिःॐ ।।

❑❑❑

पूजन सामग्री

हल्दी पावडर
हल्दी गांठ
रोली
अबीर
सिन्दूर
जनेऊ
कलावा
पीली सरसो
इत्र
गुलाब जल
धूप
कपूर
रुई बत्ती लम्बी
रुई बत्ती गोल
कच्चा सूत
लौंग
इलायची
सोपाड़ी
देसी घी
तिल तेल
सरसो तेल
चमेली तेल
माचिस
शहद
अष्टगंध
नारियल
गरी गोला
जौ का आटा
चावल का आटा
काला तिल का आटा
खड़ा जौ
चावल

काला तिल
सफेद तिल
मिश्री
सर्वोषधि
शतावरि
गुग्गुल
चन्दन भूरा
कमलगट्टा
नाग-नागिन
पंचमेवा
जायफल
बेलगूदा
अगर-तगर
जटामांसी
श्रृंगार सामान
इन्द्र जौ
नवग्रह लकड़ी
आमकी लकड़ी
दशांग
सप्तधान्य
गुड
शक्कर
काली उड़द
पंचरत्न
कलश मिट्टी
कलश धातु
दियाली
कोसा
कपड़ा - सफेद, लाल, पीला, हरा, काला
दोना
मीठा

फल
पान
गंगाजल
ब्राह्मणवरण सामग्री
भस्म
भांग
दूध
दही
फूल
माला
बेलपत्र
शमीपत्र
धतूर
मदार
दूब
आसन
माला
थाली
लोटा
ग्लास
चम्मच
पंचपात्र
झण्डा
ईंट
कलर अजन्ता - (लाल, पीला, हरा, काला)
चूना
गेरू
पेपर
चुनरी
आभूषण
खीर-पूड़ी
कुश

सन्ध्या में ज्ञातव्य

धर्मपरायण देश में परम्परा से नित्यानुष्ठान का क्रम अनादि काल से चला आ रहा है। पञ्च महायज्ञ की तरह सन्ध्या भी नित्यकर्म है। इसके अनुष्ठान से नित्य पाप की निवृत्ति होती है।

''सन्ध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्म लोकभनामयम्'' ऐसा मनु स्मृति में कहा है। सन्ध्या ब्रह्मलोक के प्राप्ति का साधन बताया गया है। इसी कड़ी में ''सन्ध्यामिष्टं चरुहोमं यावज्जीवं समाचरेत्'' का निर्देश कल्प-ग्रन्थों में मिलता है। ''सम्यक् ध्यायते ब्रह्मपदं सा सन्ध्या'' ब्रह्म के अनुसन्धान को सन्ध्या कहते हैं। इस प्रकार का मन्तव्य कई मनीषियों के द्वारा प्रतिपादित हुआ है। सन्ध्या एक नित्यकर्म है, जिसके न करने से विशेष हानि बतायी गयी है। वेद रूपी वृक्ष के मूल का नाम सन्ध्या (वेदो वृक्षः तस्य मूलं हि सन्ध्या) है। अतः मूल वस्तु होने के कारण समस्त वृक्ष की रक्षा हेतु सन्ध्या रूपी मूल की रक्षा परमावश्यक है। इसी दृष्टिकोण से सूतके कर्मणां त्यागः सन्ध्यादीनां विधीयते कहकर सन्ध्या की प्रतिष्ठा की गयी है (अहरहः उपासीतः सन्ध्याम्)। अतः सन्ध्या कर्म मूल है। ईश्वर के सन्निकर्ष में सहायक है। वेद प्रतिपादिल वेदमूला है। ऐहिक आमुष्मिक सभी की दात्री है और अन्तः करण की शुद्धि है। बिना सन्ध्या के देव पितृ किसी प्रकार के कार्यों को करने का अधिकार नहीं प्राप्त होता है। सन्ध्या एवं गायत्री का अविच्छिन्न सम्बन्ध है। शास्त्रों में कहा गया है- ''या सन्ध्या सा तु गायत्री द्विधा भूत्वा प्रतिष्ठिता'' दोनों एक ही है। सन्ध्या की उपासना करने पर विष्णु की उपासना होती है (सन्ध्या उपासित येन विष्णुस्तेन उपासितः) सन्ध्या की समस्त क्रिया में भगवती गायत्री के ध्यान जप आदि की विधि मिलती है तथा वही गायत्री

ब्राह्मी वैष्णवी और रौद्री रूप में व्याहृति त्रिदेव, त्रिवेद कार्य रूप होने से इन्हें वेद-जननी त्रिपदा कहा गया है। श्रद्धायुक्त होकर एकाग्रचित्त से मौन हो व्याहृति युक्त जप करने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सुलभ हो जाते हैं। यथा योगियाज्ञवल्क्य में "चिन्तयामों वयं भर्गं धियो यो नः प्रचोदयात्। धर्मार्थकाममोक्षेषु बुद्धिवृतिं पुनःपुनः" ऐसा चिन्तन पञ्च कर्मेन्द्रिय, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्चतन्मात्रा, पञ्चमहाभूत, मन, बुद्धि महदात्मा और अव्यक्त इन चौबीस अक्षरों के रूप में प्राप्त होता है। प्रत्येक अक्षरों के प्रत्येक देवताओं का स्वामित्व होता है। सर्वव्यापी प्रणवरूपी पुरुष को पञ्चविंश संज्ञा समझना चाहिए। यही प्रकृति पुरुष का सम्बन्ध है। कूर्मपुराण में गायत्री और वेदों के तौल को एक बताया है।

गायत्रींचैव वेदाश्च तुलया समतोलयन् ।
वेदा एकत्र साङ्गास्तु गायत्रीचैकतः स्मृताः।।

गायत्री दस बार जपने से लघु पाप व सौ (१००) बार जपने से अनेक पाप व सहस्त्र जप से उपपातक का नाश, लक्ष जप से महापातक का नाश और कोटि जप से देव-दुर्लभ वस्तु प्राप्त हो जाती है। ऐसा व्यास स्मृति में कहा गया है। महर्षि यम् ने "गायत्र्याः न परमं जापं गायत्र्याः न परमं तपः गायत्र्याः न परमं ध्यानं, गायत्र्याः न परमं हुतम्" कहकर जप की उत्कृष्टता सिद्ध की है। अग्नि पुराण में सहस्त्र जप के साथ परमात्मा का ध्यान कर परम पद की प्राप्ति कही है।

गायत्री समस्त कामनाओं की दात्री है। महर्षि शंख ने घर में जपने से एक गुण फल, नदी में द्विगुण, गोशाला में दस गुण, अग्निगृह में शताधिक, तीर्थ, सिद्ध क्षेत्र, देवालय में शतकोटिक व सहस्त्र गुण (अनन्तं विष्णु सन्निधौ) फल कहा है। स्फटिक, रुद्राक्ष, पुत्रजीवक, कुशग्रन्थि या करमाला में भी जपने का विधान मिलता है, जिसके द्वारा प्राण की रक्षा हो, उसे गायत्री कहते हैं। अतः विष्णु धर्मोत्तर में लिका है कि-

कामकामो लभेत् कामं गतिकामस्तु सद्गतिम्।
अकामस्तदवाप्नोति यद् विष्णोः परमं पदम्।।

गायत्री जप से कामना परायण को कामना की सिद्धि सद्गति चाहने वाले

जन को सद्गति की प्राप्ति और निष्काम जन को परम पद ब्रह्म की प्राप्ति होती है। यही सब गायत्री जप की महिमा है। पुनश्च वाचिक, उपांशु और मानसिक तीन प्रकार के जप होते हैं। इनमें मानसिक जप की विषेश प्रधानता कही गयी है। योग याज्ञवल्क्य में तो कहा गया है कि "गायत्री यो न जानाति वृथा तस्य परिश्रमः"। गायत्री को जो नहीं जानता जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त का जीवन व परिश्रम व्यर्थ है। अन्त में रौरव नरक की प्राप्ति होती है (रौरवं नरकं व्रजेत्)। वास्तव में इस मन्त्र को सवितृ मन्त्र कहते हैं। मन्त्र के देवता भगवान सवितृनारायण हैं व छन्द गायत्री है। जो वेदों में सर्वोत्कृष्ट नाम से प्रयुक्त हुआ है। ब्रह्मा शिरो, विष्णु, हृदयं, रुद्र कवचं, परमात्मा शरीरं, अग्निर्मुखं, संख्यायनस् गोत्रम् , ब्रह्मवर्चस् कामनार्थ प्रयुक्त हुआ है। वेदों की अनादिता से गायत्री की अनादिता स्वतः सिद्ध हो जाती है। इसके द्रष्टा ऋषि, ब्रह्म वशिष्ठ एवं विश्वामित्र कहे गये हैं। विविधता की दृष्टि से गायत्री एक पदी, द्विपदी, त्रिपदी, चतुष्पदी, पञ्चपदी, शताक्षरा, ब्रह्मदण्ड, ब्रह्मशीर्ष, ब्रह्मास्त्र आदि अनेक स्वरूपों में वर्णित की गयी है। जपादि की दृष्टि से उत्तरोत्तर अधिकार प्राप्त होता है। अनेक साधकों ने तन्त्रविधि में शापोद्धार आदि विधि का भी वर्णन किया है। समस्त विधि का पालन करते हुए गायत्र्यानुष्ठान को पूर्ण कहा है। विविध देवताओं की उपासना भी तदर्थ गायत्री मन्त्र से की जाती है।

❑❑❑

सन्ध्या वन्दन

(१) त्रिराचमनम्

इन तीन मन्त्रों से तीन बार आचमन करें।

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

इस मन्त्र को बोलकर हाथ धो लें।

ॐ हृषिकेशाय नमः।

(२) **पवित्रीधारणम्**

दाएँ हाथ की अनामिका ऊँगली में दो कुशा की और बाएं हाथ की अनामिका ऊँगली में तीन कुशा की बनी हुई पवित्री धारण करें।

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।।

(३) **पवित्रीकरणम्**

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ अपवित्रः पवित्रोवेत्यस्य वामदेव ऋषिः विष्णुर्देवतागायत्रीच्छन्दः हृदिपवित्रकरणे विनियोगः।

तत्पश्राचात् निम्नलिखित मन्त्र से मार्जन करें (शरीर एवं सामग्री पर जल छिड़के)।

ॐ अपवित्रपवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

(४) आसनशुद्धि

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से आसन पर जल छिड़क कर दाएँ हाथ से उसका स्पर्श करें।

ॐ पृथ्वि त्वयाधृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

(५) स्वस्ति- तिलकधारणम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ त्र्यायुषमित्यस्यनारायणऋषिः रुद्रोदेवताउष्णिक्छन्दः भस्मधारणेविनियोगः।

तिलकधारण मन्त्र

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योः अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्द्दधातु।।

(६) शिखाबंधनम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ मानस्तोक इतिमन्त्रस्य कुत्सऋषिः जगती छन्दः एकोरुद्रो देवता शिखाबन्धनेविनियोगः।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान्नुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे।।

नोट- समयाभाव में निम्न मन्त्र का प्रयोग करें।

चिद्रूपिणि! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते! तिष्ठदेवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्वमे।।

(७) संकल्पः

ॐ तत्सदद्यैतस्य श्रीब्रह्मणोद्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे-कलिप्रथमचरणेजम्बूद्वीपेभरतखण्डेआर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे अमुकनगरे/ग्रामे अमुक सम्वत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्मा/गुप्त/वर्माऽहम् ममोपात्तदुरितक्षपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातः/मध्याह्न/सायंसंध्योपासनं करिष्ये।

(८) अघमर्षण आचमनम

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ ऋतंचेतित्र्यऋचस्यमाधुच्छन्दसोऽघमर्षणऋषि-रनुष्टुप्छन्दोभाववत्तं दैवतमपामुपस्पर्शनेविनियोगः।

तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र को बोलकर आचमन करें।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

तदनन्तर दाएँ हाथ में जल लेकर बाएँ हाथ से ढककर 'ॐ' के साथ तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़कर अपनी रक्षा के लिए अपने चारों ओर जल की धारा दें।

फिर प्राणायाम करें।

(९) प्राणायाम

ॐ कारस्य ब्रह्माऋषिर्दैवीगायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लोवर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्नि भरद्वाज गौतमात्रि वशिष्ठ कश्यपा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्ति-त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिर्वरुणेन्द्रविश्वेदेवादेवताः अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः। ॐ तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः। ॐ आपोज्योतिरिति शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्यादेवताः प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहि।

धियोयोनः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतिरसोऽमृतं-ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ।।

(१०) प्रातः आचमनम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ सूर्यश्चमेति नारायण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र को बोलकर आचमन करें।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्योरक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं आपोऽमृतयोनौ सुर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।।

(११) मध्याह्न आचमनम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ आपः पुनन्त्वितिमन्त्रस्यब्रह्माऋषिर्गायत्रीछन्दः आपोदेवताअपामूस्पर्शनेविनियोगः।

तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र को बोलकर आचमन करें।

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पुथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातुमाम्।

यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहँ-स्वाहा।।

(१२) सायं आचमनम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ अग्निश्चमेतिरुद्रऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शनेविनियोगः।

तत्पश्चात् नीते लिखे मन्त्र को बोलकर आचमन करें।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्वा पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अह्स्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।।

(१३) मार्जनम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ आपो हि ष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

तत्पश्चात् आपोहिष्ठेत्यादि ऋचाओं के नौ चरणों में से सात चरणों को पढ़ते हुए तीन कुशाओं/ दाहिने हाथ की तर्जनी मध्यमा अनामिका अंगुलियों से सिर पर जल छिड़के, आठवें चरण को पढ़ते हुए पृथ्वी पर जल छिड़के तथा नवें चरण को पढ़ते हुए सिर पर जल छिड़के।

१) ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः। २) ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३) ॐ महे रणाय चक्षसे। ४) ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५) ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६) ॐ ऊशतीरिव मातरः।

७) ॐ तस्मा अरङ्गमाम वः। ८) ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९) ॐ आपो जनयथा च नः।

(१४) अभिमन्त्रणम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपोदेवताः शिरस्सेके विनियोगः।

बाएँ हाथ में जल लेकर दाएँ हाथ से ढक लें और निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर सिर पर छिड़के।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।।

(१५) अघमर्षणम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप छन्दो भाववृत्तो देवता अघमर्षणे विनियोगः।

दाएँ हाथ में जल लेकर उसे नाक से लगाकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े और ध्यान करें कि समस्त पाप दाएँ नाक से निकलकर हाथ के जल में आ गए हैं। फिर उस जल को बिना देखे बायीं कुक्षी (काख) के नीचे से पीछे की ओर फेंक दें।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।

अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

(१६) आचमनम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीनऋषिरनुष्टुपछन्दः आपोदेवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

इस मन्त्र को बोलकर आचमन करें।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्तवं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम ।।

(१७) सूर्याघ्यंम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ कारस्यब्रह्मऋषिर्गायत्रीछन्दः परमात्मादेवता अर्घ्यदाने विनियोगः। ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिकनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः अर्घ्यदाने विनियोगः.।

ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सूर्याघ्यंदाने विनियोगः।

निम्न मन्त्र को पढ़कर सुर्य अर्घ्य देंवे।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्यधीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

(इस मन्त्र से सूर्यनारायण भगवान को तीन बार अर्घ्य दें)

विशेष- यदि समय (प्रातः सूर्योदय से तथा सूर्यास्त से तीन घड़ी बाद) का अतिक्रमण हो जाए तो प्रायश्चित्तस्वरूप नीचे लिखे मन्त्र से एक अर्घ्य पहले देकर तब उक्त अर्घ्य दें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।

अथवा

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानों निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन्।।

प्रातः अर्घ्य–पूर्वाभिमुख हो जल अक्षत पुष्पादि लेकर सीधे खड़े होकर एक (दाएँ) पैर की एड़ी (पिछला भाग) उठाए हुए तीन बार जल में सूर्य को एक अर्घ्य दें।

मध्याह्न अर्घ्य–पूर्वाभिमुख/उत्तराभिमुख हो जल अक्षत पुष्पादि लेकर सीधे खड़े होकर सूर्य को एक अर्घ्य दें।

सायं अर्घ्य–पश्चिमाभिमुख होकर बैठे हुए सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें।

(१८) सूर्योपस्थानम्

इस मंत्रो को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उदुत्यमित्यस्यप्रस्कण्वऋषिः निचृद् गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ तच्चक्षुरित्यस्यदध्यङ्ङाथर्वणऋषिरक्षरातीत-पुरउष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

तत्पश्चात् प्रातः खड़े होकर तथा दोपहर में दोनों हाथों को उठाकर और सांयकाल बैठकर हाथ जोड़कर नीचे लिखे मंत्रो को पढ़ते हुए सूर्योपस्थान करें।

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावा पृथ्वी अन्तरिक्ष ᳪ- सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम् शरदः ᳪ- शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः

शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।

(१९) गायत्री आवाहनम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ तोजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्यजुस्त्रिष्टुबुष्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।

इस मन्त्र को बोलकर गायत्री माता का आवहन करें।

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि। धामनामासि प्रियं देवनामनाधृष्टं देवयजनमसि।।

(२०) मनसा पूजा एवं भूत शुद्धि

स्वागतं देवदेवशि! सन्निधौ मे महेश्वरि!
गृहाण मानसी पूजां यथार्थ परिभाविताम् ।।

अर्थ–हे देवदेवेशि, मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ, तुम मेरे सन्निकट स्थित होकर यथार्थ रूप से मानसी पूजा ग्रहण करो।

लकारं च हकारं च रकारयोः। वकार मिति विख्यातं पंच पूजात्मकं जपेत्।

ॐ लं पृथिव्यात्मने गायत्र्यै नमः गन्धं समर्पयामि।

ॐ हं आकाशत्मने गायत्र्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।

ॐ यं वाय्वात्मने गायत्र्यै नमः धूपं आघ्रापयामि।

ॐ रं अग्नयात्मने गायत्र्यै नमः दीपं दर्शयामि।

ॐ वं अमृतात्मने गायत्र्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

ॐ यं रं लं वं हं पञ्च तत्वात्मने परब्रह्मणे नमः। इति मन्त्र पुष्पांजलिम् समर्पयामि।

भूत शुद्धि

मन्त्रानुष्ठान में भूत शुद्धि आवश्यक है।

सन्ध्या वन्दन में अघमर्षण भी भूत शुद्धि ही है।

भूत शुद्धि का अर्थ है–अव्यय ब्रह्म के संयोग से इस देह रूप में परिणत पञ्च भूतों का शोधन। चित्त शुद्धि के लिए जितनी क्रियाओं का निर्देश किया गया है उसमें इस क्रिया का स्थान सर्वोपरि है। वशिष्ठ संहिता में कहा गया है– बिना इसके जप पूजादि कृत्य निरर्थक हो जाते हैं।

अथ क्रिया– सन्ध्यादि से निवृत्त होकर ध्यान के आसन पर बैठकर फिर अपने चारों ओर जल छिड़क कर ऐसी भावना करे कि मेरे चारों ओर एक दिव्य अग्नि की चहार दीवारी है। ऐसी भावना करते समय अग्नि बीज " रं" का जप करता रहे और मेरा देह तथा आसन स्थिर है, भगवान की कृपा से मुझे कोई विघ्न बाधा अपने संकल्प से विमुख नहीं कर सकेगी, ऐसी भावना करे। फिर भूत शुद्धि का संकल्प करें।

संकल्प–

ॐ इत्यादि देशकाल संकीर्तनान्ते अमुक पूजाधिकार सिद्धये भूतशुद्धयाऽहं करिष्ये। इति संकल्पः।

इसके पश्चात् गुदालिंग के बीच मूलाधार में कुण्डलिनी का सहस्त्रविद्युत कान्ति के समान देदीप्यामान तथा सर्पाकार और कमल नाल गत तन्तु के समान सूक्ष्म केन्द्र है, सो वह कुण्डलिनी अब सोती हुई जग गई है और स्वाधिष्ठान में आ गई। पुनः मणीपूरक में आकर जीव के सब पापों को भस्म कर दिया। क्रमशः स्वाधिष्ठान मणिपूरक चक्र को भेदन करके सुषुम्ना मार्ग से हृदयास्थित अनाहत चक्र में आ गई है। हृदय में दीप शिखा के आकार समान जीव का निवास है। उस जीव को कुण्डलिनी ने अपने मुख में ले लिया और

कण्ठ में विशुद्ध चक्र तथा भ्रूमध्य में आज्ञा चक्र को भेदन करके पूर्वोक्त सुषुम्ना मार्ग से ही सहस्त्रार में पहुँच गई। सहस्त्रार में परमात्मा का निवास है।हंस मन्त्र के द्वारा यह कुण्डलिनी जीवात्मा के साथ ही परमात्मा में विलीन हो गई। कुछ समय तक इसी अवस्था का अनुभव कर पुनः जीवात्मा हो हृदय में ले आना चाहिए और आगे का विधान करना चाहिए अर्थात् हृदय से नाभि में और नाभि से स्वाधिष्ठान में पुनः पहुँचा देवे।

(२१) विनियोग

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः परमात्मादेवता, ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापतिर्ऋषि-र्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्निवायुसूर्यादेवताः, ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

(२२) न्यासः

अथ अङ्गन्यासः

ॐ ब्रह्मणे नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे। ॐ सविता परमात्मा देवतायै नमः हृदये। ॐ प्रणवो बीजाय

नमः गुह्ये। ॐ स्वराः शक्तये नमः आधारे। ॐ अव्यक्तं कीलकाय नमः पादयोः।

अथवा

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ भूर्भुवः स्वः भर्गोदेवस्य धीमहि शक्तये नमः आधारे। ॐ भुर्भुवः स्वः धियोयोनः प्रचोदयात् कीलकाय नमः पादयोः।

अथ करन्यासः

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः भूर्भुवः स्वः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरेण्यं भुर्भुवः स्वः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ भुर्भुवः स्वः भर्गोदेवस्य भूर्भुवः स्वः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ भुर्भुवः स्वः धीमहि भूर्भुवः स्वः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः धियो यो नः भूर्भुवः स्वः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचोदयात् भूर्भुवः स्वः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादि न्यासः

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचोदयात् भूर्भुवः स्वः हृदयाय नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः धियोयोनः भूर्भुवः स्वः शिरसे स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्यधीमहि भूर्भुवः स्वः स्यधीमहि भूर्भुवः स्वः शिखायै वषट्। ॐ भूर्भुवः स्वः भर्गोदेवस्य भूर्भुवः स्वः कवचाय हुम्। ॐ भूर्भुवः स्वः वरेण्यं भूर्भुवः स्वः नेत्रत्रयाय वषट्। ॐ भूर्भुवः स्वः भर्गोदेवस्य भूर्भुवः स्वः कवचाय हुम्। ॐ भूर्भुवः स्वः वरेण्यं भूर्भुवः स्वः नेत्रत्रयाय वषट्। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ।

अथ मन्त्र न्यासः

नीचे लिखे मन्त्र से अंग का स्पर्श करें या केवल मन्त्र बोलें।

ॐ तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम्।
वरेण्यं कटिदेशन्तु नाभिं भर्गस्तथैव च।
देवस्य में हृदयं पातु धीमहीति गलं तथा।
धियो मे पातु जिरुायां यत्पदं पातु लोचने।
ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात्।

यह न्यास विश्वामित्र कल्प से पृथक है। यथेच्छा न्यास करें या न करें।

(२३) गायत्रीध्यानम्

ॐ श्वेतवर्णासमुद्दिष्टा कौशेयवसनातथा। श्वेतैर्विलेपनैः

पुष्पैरलङ्कारैश्चभूषिता ।।

आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

प्रातः काल ब्रह्मरूपा गायत्री माता का ध्यान

ॐ बालां विद्यां तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम्।
रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा।।
कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थितां।
ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम्।।
मन्त्रेणावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात्।।

मध्याह्नकाल विष्णुरूपा गायत्री माता का ध्यान

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्था पीतवाससाम्।
युवती च यजुर्वेदा सूर्यमण्जलसंस्थिताम्।।

सांयकाल शिवरूपा गायत्री माता का ध्यान

ॐ सांयाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम्।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्।।

(२४) गायत्री उपस्थानम्

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ गायत्र्यसीतिविवस्वान्ऋषिः स्वराण्महापंक्तिश्छन्दः परमात्मादेवतागायत्र्युपस्थानेविनियोगः।

इस मन्त्र को बोलकर गायत्री माता का उपस्थान करें।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि। न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत्।।

(२५) गायत्री- शापविमोचन

(१) ब्रह्मशापविमोचन

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्रीशक्तिर्देवता गायत्रीछन्दः ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः।

ॐ गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः। तां पश्यन्ति धीराः सुमनसो वाचमग्रतः।।

ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तनो ब्रह्म प्रचोदयात्।

ॐ देवि! गायत्री ! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ।

(२) वसिष्ठशापविमोचन

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋषिर्वसिष्ठानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्रीछन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम्।।

(योनिमुद्रा दिखाकर तीन बार गायत्री जपे)

ॐ देवि! गायत्री! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव ।

(३) विश्वामित्रशापविमोचन

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिर्विश्वामित्रानुगृहीता

गायत्रीशक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवाः। देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये ।।

ॐ देवि! गायत्री! त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ।

(४) शुक्रशापविमोचन

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ अस्य श्रीशुक्रशापविमोचनमन्त्रस्य श्रीशुक्रऋषिः अनुष्टुपछन्दः देवी गायत्री देवता शुक्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः।

आत्मज्योतिरहंशुक्रः सर्वज्योतीरसेऽस्म्यहम्।।

ॐ देवि! गायत्री! त्वं शुक्रशापाद्विमुक्ता भव।

(२६) गायत्री हृदय स्तोत्र

श्री गायत्री हृदय स्तोत्र

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ अस्य श्री गायत्रीहृदयस्य नारायण ऋषिर्गायत्री छन्दः परमेश्वरी गायत्री देवता गायत्री हृदय जपे विनियोगः।

स्तोत्र

ॐ द्यौर्मूर्ध्नि दैवतम्। दन्तपङ्क्तावश्विनौ। उभयोः संध्ययोः चौष्ठौ। मुखेऽग्निः। जिरुायां सरस्वती। ग्रीवायां तु बृहस्पतिः। स्तनयोर्वसवोऽष्टौ। बारुोर्मरुतः। हृदये पर्जन्यः। आकाश उदरम्। नाभावन्तरिक्षम्। कट्योरिन्द्राग्नी। जघने विज्ञानघनः

प्रजापतिः। कैलासमलयो ऊरौ। विश्वेदेवा जान्वोः। जङ्घयोः कौशिकः। गुह्य अयने। ऊरौ पितरः। पादयोः पृथिवी। वनस्पतयोऽङ्गुलिषु। ऋषयो रोमसु। नखेषु मुहुर्तानि। अस्थिषु ग्रहाः। असृङ्भासयोः ऋतवः। संवत्सरा वै निमिषे। अहोरात्रयोरादित्यश्चन्द्रमा। प्रवरा दिव्यां वरदां गायत्रीं सहस्त्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये। ॐ तत्सवितुर्वरेण्याय नमः। ॐ तत्पूर्वाजयाय नमः। तत्प्रातरादित्याय नमः। तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायै नमः। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सांयमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। सांयप्रातरधीयानोऽपापो भवति। सर्वतीर्थेषु स्नातो भवति। सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति। अवाच्यवचनात् पूतो भवति। अभक्ष्यभक्षणात् पूतो भवति। अभोज्यभोजनात् पूतो भवति। अचोष्यचोषणात् पूतो भवति। असाध्यसाधनात् पूतो भवति। दुष्प्रतिग्रहशतसहस्त्रात् पूतो भवति। सर्वप्रतिग्रहात् पूतो भवति। पङ्क्तिदूषणात् पूतो भवति। अनृतवचनात् पूतो भवति। अथाब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति। अनेन हृदयेनाधीतेन क्रतुसहस्त्रेणेष्टं भवति। षष्टिशतसहस्त्रगायत्र्या जपानि फलानि भवन्ति। अष्टौ ब्रह्मणान् सम्यक ग्राहयेत् तस्य सिद्धिर्भवति। य इदं नित्यमधीयानो ब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्वपापैः प्रमुच्यते इति ब्रह्मलोके महीयते। श्रीनारायणेनोक्तं ।

(२७) जप के पूर्व चौबीस मुद्राएँ

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा।।

षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं चैव ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्।।

प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा।।
एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः।

(२८) गायत्री जप

जप का विधान

१) जप करते समय गायत्री के एक-एक पद का अलग-अलग उच्चारण मन ही मन करके जप करना चाहिए।

२) "वरेणियम्" ऐसा उच्चारण करना चाहिए, क्योकि कहा गया है-

वरेण्यम् पठने चोक्ता जप काले विशेषतः।
पाठ काले वरेण्यम् स्यात् जपकाले वरेणियम्।।

३) ब्रहास्त्र, ब्रह्मदंड एवं ब्रह्मशीर्ष भी जानना चाहिए।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

(२९) न्यास ध्यान

गायत्री जप के उपरांत जप के पूर्व में किए न्यास एवं ध्यान पुनः करना चाहिए।

(३०) जप के बाद आठ मुद्राएँ

सुरभिर्ज्ञान वैराग्ये योनिः शङ्खोऽथ पङ्कजम्।
लिङ्ग निर्वाण मुद्राश्च जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत्।।

(३१) गायत्रीकवच

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दो गायत्री देवता ॐ भूः बीजं भुवः शक्तिः स्वः कीलकं गायत्री प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ध्यानम्

पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोचिसमप्रभाम्।
सावित्रीं ब्रह्मबरदां चन्द्रकोटि सुशीतलाम् ।।
त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहारविराजिताम्।
वराभयाङ्कुशकशा हेमपात्राक्षमालिकाम् ।।
शङ्खचक्राब्जयुगलं कराभ्यां दधतींवराम्।
सितपंकजसंस्थां च हंसारुढां सुखस्मिताम् ।।
ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्रीकवजं जपेत् ।

ॐ ब्रह्मोवाच

विश्वामित्र!महाप्राज्ञ! गायत्रीकवचं श्रृणु।
यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत्क्षणात् ।।
सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी।
ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी।।
कर्णौं मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बिके।
गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ।।
द्विजान यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती।
सांख्यायनी नासिकां में कपोलौ चंद्रहासिनी।।
चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी।
स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी ।।
उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया।
जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारणी ।।
पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गागोप्त्रिकाऽवतु।
ऊर्वोरोंकाररूपाच जान्वोः संध्यात्मिकाऽवतु ।।

जङ्घयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका।
सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादाङ्गुलीषु च।।
सर्वाङ्ग वेदजननी पातु मे सर्वदाऽनघा।
इत्येतत्कवचं ब्रह्मन्गायत्र्याः सर्वपावनम्।
पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोगनिवारणम्।
त्रिसंध्यं यः पठेद्विद्वान्सर्वान्कामानवाप्नुयात।
सर्वसास्त्रार्थ तत्वज्ञः सभवेद्वेदवित्तमः।
सर्वयज्ञ फलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात्।
प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थंश्चतुर्विधान्।।

।। इति श्रीविश्वामित्रसंहितोक्तं गायत्रीकवचं संपूर्णम् ।।

सिर पर गोमुखी रखकर तीन बार आचमन करें।।

इसके पश्चात् गोमुखी को सिर पर से उतार कर निम्नलिखित मन्त्र से सूर्य की स्तुति करें।

(३२) सूर्य स्तुति

एक चक्ररथो यस्य दिव्यः करक भूषितः।
समे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः।।

(३३) जप समर्पण-मन्त्र

ॐ देवा गातुविद इति मन्त्रस्य मनसस्पति ऋषिर्विराडनुष्टुप्छन्दः वातो देवता जपनिवेदने विनियोगः।

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित।
मनसस्पत इमं देवयज्ञँ स्वाहा व्वाते धाः।।

(३४) जपान्ते माला विसर्जन

ॐ त्वे माले सर्व देवानां प्रीतिदा शुभदाभव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यथोवीर्यं च सर्वदा।।

सिर पर गोमुखी रखकर तीन बार आचमन करें।

(३५) गायत्री तर्पण (केवल प्रातः संध्या में करें)

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ गायत्र्या विश्वमित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः गायत्रीतर्पणे विनियोगः।

तत्पश्चात् एक-एक मन्त्र को पढ़ते हुए जल तष्टा में छोड़े।

ॐ भूः ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ भुवः यजुर्वेदपुरुषं त.। ॐ स्वः सामवेदपुरुषं त.। ॐ महः अथर्ववेदपुरुषं त.। ॐ जनः इतिहासपुराणपुरुषं त.। ॐ तपः सर्वागमपुरुषं त.। ॐ सत्यं सत्यलोकपुरुषं त.। ॐ भूः भूर्लोकपुरुषं त.। ॐ भुवः भुवर्लोकपुरुषं त.। ॐ स्वः स्वर्लोकपुरुषं त.। ॐ भूः एकपदां गायत्रीं त.। ॐ भुवः द्विपदां गायत्री त.। ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीं त.। ॐ भूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्रीं त.। ॐ उषर्सीं त.। ॐ गायत्रीं त.। ॐ सावित्रीं त.। ॐ सरस्वतीं त.। ॐ वेदमातरं त.। ॐ पृथिवीं त.। ॐ अजां त.। ॐ कौशिकीं त.। ॐ सांकृतिं त.। ॐ सार्वजितीं त.।

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।।

(३६) सूर्यप्रदक्षिणा

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ विश्वतश्चक्षुरिति भौवन ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दो विश्वकर्मा देवता सूर्यप्रदक्षिणायां विनियोगः।

सूर्य प्रदक्षिणा मन्त्र

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।

नोट–समयाभाव में निम्न मन्त्र का प्रयोग करें।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणायां पदे पदे ।।

अंत में भगवान को यह वाक्य बोलते हुए जप निवेदित करें–

अनेन गायत्री जपकर्मणा सर्वान्तर्यामी भगवान् नारायणः प्रीयतां न मम ।

(३७) क्षमाप्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरी।
यत्पूजितं मया देवी प्रसीद परमेश्वरी।।

(३८) गायत्री देवी विसर्जन

इस मन्त्र को बोलकर विनियोग छोड़े।

ॐ उत्तमेशिखरे इत्यस्य वामदेवऋषिरनुष्टुप्छन्दः गायत्री देवता गायत्रीविसर्जन विनियोगः।

विसर्जन मन्त्र

उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि! यथासुखम् ।।

(३९) संध्योपासन कर्म का समर्पण

अनेन संध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सत्श्रीब्रह्मार्पणमस्तु।

फिर भगवान का स्मरण करें–

यस्यस्मृत्या च नामोत्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

श्रीविष्णवे नमः। श्रीविष्णवे नमः। श्रीविष्णवे नमः।
श्रीविष्णुस्मरणात्परिपूर्णताऽस्तु ।।

❑❑❑